# Edgar Allan Poe's The Gold-Bug (in Hindi)

# सोने का कीड़ा

आशा श्रीवास्तव



एडगर एलन पो की पुरस्कृत
कहानी का हिन्दी रूपांतरण

# Edgar Allan Poe’s

# The Gold-bug

# सोने का कीड़ा


**मूल रचनाकार**

एडगर एलन पो

**हिंदी लेखन**

आशा श्रीवास्तव

**सह-लेखन एवं कवर आर्ट**

आदित्य श्रीवास्तव

**सह-लेखन एवं संपादन**

आलोक श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण: 2016

# सोने का कीड़ा

## श्रीमान एडगर एलन पो द्वारा

अभिव्यक्त रूप से "द डॉलर न्यूज़पेपर" के लिए लिखी गयी
एक पुरस्कृत कहानी;

*और जिसके लिए एक सौ डॉलर के प्रथम लाभांश का भुगतान किया गया था।*

# सोने का कीड़ा

“क्या हो रहा है! क्या हो रहा है! यह आदमी पागल जैसा नाच रहा है!

उसे टैरनट्युला[1] ने काट लिया है।”

—ऑल इन द रौंग[2]

बहुत साल पहले, मेरी *मिस्टर विलियम लेग्रांड*[3] के साथ काफी घनिष्ठता हो गयी थी। वह प्राचीन *ह्यूगनॉट*[4] परिवार से था, और एक जमाने में काफी रईस हुआ करता था; लेकिन बदकिस्मती की श्रृंखलाओं ने उसे कुछ ऐसा घेरा कि वह दरिद्र हो गया। अपनी बदकिस्मती के परिणामस्वरूप होने वाली शर्मिंदगी को दूर करने के लिए, उसने अपने पूर्वजों के शहर *न्यू ओरलियंस*[5], को छोड़ दिया और *दक्षिणी कैरोलाइना*[6] में

---

[1] Tarantula-रोयेंदार जंगली मकड़ी।

[2] All in the Wrong-इस नाम की कोई भी रचना इस कथा के लिखे जाने तक नहीं लिखी गयी थी। कथित रचना और उद्धृत कथित वाक्यांश दोनों ही एडगर एलन पो की काल्पनिक रचना है।

[3] Mr. William Legrand

[4] Huguenot

[5] New Orleans

[6] South Carolina

*चार्ल्सटन*[7] के समीप, *सलिवन द्वीप*[8] पर आकर अपना निवास बनाया।

यह द्वीप एकदम अकेला है। यह लगभग तीन मील लम्बा है और इसका ज्यादातर हिस्सा समुद्री रेत से भरा हुआ है। इसकी चौड़ाई कहीं से भी चौथाई मील से ज्यादा नहीं है। यह मुश्किल से ही इन्द्रियगोचर होने वाली संकरी खाड़ी द्वारा मुख्य भूभाग से अलग है, जिसका अपने रास्ते पर सरकंडों और कीचड़ से भरे हुए निर्जन प्रदेश में धीरे-धीरे बहाव होता है, जो दलदली मुर्गियों के रहने का पसंदीदा आश्रयस्थल है। जैसा माना जा सकता है, यहाँ पेड़-पौधों की संख्या थोड़ी कम है या फिर ऐसी है कि जिन्हें छोटे-पौधे या झाड़ियाँ कहना ज्यादा उचित होगा। कोई भी बड़े पेड़ नहीं दिखते है। पश्चिमी सिरे के समीप, जहां पर *मौल्ट्री किला*[9] स्थित है, और जहाँ ख़राब हालत में इमारतें हैं (जिनमें गर्मियों के समय *चार्ल्सटन* की धूल और बुखार से बचने आये हुए शरणार्थी ठहरते हैं), वहाँ पर वाकई कंटीले ताड़ पाए जा सकते हैं। पर इस पश्चिमी सिरे और समुद्री किनारे पर बनी उज्ज्वल श्वेत समुद्रतट की रेखा के अलावा पूरा द्वीप, आकर्षक हिना की घनी झाड़ियों से ढंका हुआ नजर आता है, जिसको इंग्लैंड के उद्यान विशेषज्ञ बहुत बेशकीमती मानते हैं। यहाँ पर झाड़ियाँ प्रायः पन्द्रह से बीस फीट की ऊंचाई तक

[7] Charleston
[8] Sullivan Island
[9] Fort Moultrie

पहुँच जाती हैं, और जो लगभग अभेद्य गुल्म-सा बना लेती है जिससे वातावरण इसकी खुशबू से भर जाता है।

इन गुल्मों की सबसे भीतरी खाली जगह पर (जो कि द्वीप के पूर्वी हिस्से से या दूरवर्ती हिस्से से ज्यादा दूर नहीं है) *लेग्रांड* ने खुद एक छोटी-सी झोपड़ी बनाई हुई थी, जिसमें वह उस समय रहने लगा था, जब मैं संयोग से पहली बार उससे मिला था। हमारी यह मुलाक़ात जल्द ही दोस्ती में तब्दील हो गयी–क्योंकि उसके वैराग्य में ऐसा कुछ था जिससे कौतूहल और सम्मान उत्पन्न होता था। मुझे पता चला कि वह काफी पढ़ा-लिखा था, और उसका मस्तिष्क असामान्य रूप से विकसित था, किन्तु इंसानों के प्रति द्वेष से ग्रस्त था और उसकी मनोदशा तेजी से बदल जाया करती। कभी तो वह बहुत ही ज्यादा खुश हो जाया करता, तो कभी हताशा में डूब जाया करता था। उसके पास बहुत-सी किताबें थीं किन्तु उन्हें खोल कर वह शायद ही कभी देखा करता था। उसके मनोरंजन का मुख्य साधन बन्दूक चलाना और मछली पकड़ना था, या सीपियों या कीटविज्ञान-सम्बन्धी नमूनों की खोज में किनारों के पास और मेहँदी की झाड़ियों के बीच में टहलना। उसका यह संग्रह[10] कुछ ऐसा था जिससे *स्वामरडाम*[11] के मन में ईर्ष्या

---

[10] कीटविज्ञान सम्बन्धी नमूनों का संग्रह।

[11] Jan Swammerdamm-एक नेदरलैंड्स के जीवविज्ञानी और सूक्ष्मदर्शक, जिनके काम ने दिखाया कि कीड़ों की विभिन्न जीवन अवस्थायें–अंडा, लार्वा, प्यूपा, और वयस्क–सभी एक ही जीव हैं।

पैदा हो जाती। इस सैर-सपाटों में सामान्यतः उसके साथ एक बूढा नीग्रो हुआ करता था, जिसका नाम *जुपिटर*[12] था, जो परिवार में हुए उलटफेर से पहले, गुलामी से आजाद हुआ था। लेकिन उसे न धमकियों और न ही वायदों से, इस बात के लिए प्रेरित किया जा सकता था कि वह अपने युवा 'मासा विल'[13] के पदचिह्नों का अनुसरण छोड़ दे (जिसे वह अपना अधिकार समझता था)। यह संभव था कि लेग्रांड के सम्बन्धियों ने, उसको कुछ हद तक अस्थिर चित्त का जानते हुए, इस जुपिटर में यह जिद डालने का उपाय किया था, जिससे कि उस भटकते-आदमी[14] की निगरानी और देखभाल हो सके।

*सलिवन द्वीप* के अक्षांश पर पड़ने वाली ठंड शायद ही कभी कड़ाके की होती है। और साल की शुरूआत में ऐसा बहुत ही मुश्किल से हुआ करता था कि आग जलाने की वास्तव में कभी जरूरत पड़ती हो। फिर भी, सन 18 __ की अक्टूबर के बीच, कड़ाके की ठण्ड वाला एक दिन पड़ा। सूर्यास्त से ठीक पहले, मैं कठिनाई से सदाबहार वृक्षों से होता हुआ अपने मित्र की झोपड़ी की ओर गया, जिससे मैं पिछले कई हफ्तों से नहीं मिला था। उस समय मेरा निवास स्थान चार्ल्सटन में हुआ करता था, जो कि इस द्वीप से नौ मील की दूरी पर है। उन दिनों आवागमन की सुविधा आज की तारीख की तुलना में

---

[12] Jupitor

[13] Massa Will- मास्टर विलियम लेग्रांड।

[14] लेग्रांड।

काफी पिछड़ी हुई थी। उसकी झोपड़ी के पास पहुँचने पर मैंने दरवाजे को खटखटाया, जैसा कि हमारे यहाँ रिवाज था, और झोपड़ी के भीतर से किसी प्रकार का कोई उत्तर न मिलने पर, मैंने छिपायी गयी चाबियों को खोजा, और दरवाजे को खोलकर अन्दर गया। अंगीठी पर एक बढ़िया आग जल रही थी। यह एक नयी बात थी, पर अप्रिय कदापि नहीं थी। मैंने ओवरकोट को एक तरफ फेंका, और चटचटाती लकड़ियों के पास रखी आरामकुर्सी पर बैठ गया और धैर्य से अपने मेजबानों के लौटने का इंतज़ार करने लगा।

अँधेरा होने के थोड़ी देर बाद वे आये और उन्होंने मेरा बहुत ही गर्मजोशी से स्वागत किया। जुपिटर बहुत ख़ुशी से मुस्कराते हुए, रात्रि के भोजन के लिए *दलदली मुर्गियों* को पकाने के लिए दौड़-धूप करता रहा। लेग्रांड को अपने उत्साह का एक ***दौरा***-सा पड़ा था—मैं इसको किसी अन्य तरीके से कैसे कहूँ?। उसे एक अनजान सीपी मिली थी जो एक नई प्रजाति बनाती थी और इससे भी ज्यादा, उसने जुपिटर की मदद से एक *भृंग*[15] को खोजा और सुरक्षित रखा था, जिसे वह किसी नई प्रजाति का मानता था, फिर भी जिसके सम्बन्ध में वह अगले दिन मेरी राय लेना चाहता था।

[15] scarabæus

“और आज रात क्यों नहीं?” मैंने अपने हाथों को अंगीठी के ऊपर रगड़ते हुए और भृंगों की पूरी प्रजाति को बद्दुआ देते हुए, उससे पूछा[16]।

“ओह! काश मैं यह जानता कि तुम यहाँ हो!” लेग्रांड ने कहा, “तुम्हें देखे इतना अरसा हो गया; और ऐसे में मैं कैसे अंदाजा लगा सकता था कि तुम आज ही की रात मुझसे मिलने आओगे? जब मैं घर लौट रहा था मेरी मुलाक़ात किले के लेफ्टिनेंट जी[17]__ से हो गयी, और, बहुत ही बेवकूफी से, मैंने उन्हें वह कीड़ा दे दिया; इसलिये सुबह से पहले तुम्हारे लिए उस कीड़े को देखना संभव नहीं होगा। आज रात तुम यहीं रुक जाओ और सुबह होते ही मैं *जुप*[18] को उसके लिए भेज दूंगा। वह सृष्टि की सबसे खूबसूरत चीज है!”

“क्या? - सुबह?”

“बकवास! ....नहीं!—कीड़ा। वह बहुत ही चमकीले सुनहरे रंग का है—और इसका आकार हिकरी-नट[19] जितना बड़ा है - इसके पीछे बिल्कुल किनारे पर दो गाढ़े-काले धब्बे हैं, और दूसरे सिरे

---

[16] कथावाचक चिढ़ा हुआ था।

[17] Lieutenant G-लेफ्टिनेंट जनरल।

[18] Jup-जुपिटर।

[19] Hickory-nut-अखरोट जैसा काष्ठफल।

पर एक अन्य, कुछ हद तक लम्बा, धब्बा है। और उसके ऐन्टेने"–

"मैं आपसे कह रहा हूँ, मासा[20] विल, उसमें कुछ भी नहीं हैं।[21]" जुपिटर  बीच में बोल पड़ा, "अंदर से और हर तरह से, उस कीड़े का हर एक भाग ठोस सोने का है, सिवाय उसके पंखों के–मैंने अपनी जिन्दगी में कभी उसके आधे भार जितना भी कोई दूसरा कीड़ा नहीं देखा।"

"चलो, मान लेते हैं कि ऐसा है, *जुप*," मुझे लगा, लेग्रांड ने जरूरत से ज्यादा गंभीरता से जवाब दिया, "पर चिड़ियाओं को अँगीठी पर जलने के लिए छोड़ने की यह कौन-सी वजह है? (कीड़े का) रंग–" यहाँ वह मेरी और मुड़ा, "जुपिटर के विचार को साबित करने के लिए सचमुच लगभग काफी है। तुमने कभी भी ऐसी शानदार धात्विक चमक नहीं देखी होगी जो इसकी सतह से निकलती है–लेकिन इसके बारे में तुम कल तक निर्णय नहीं दे सकते। इस दौरान मैं तुम्हें इसके आकार के बारे में कुछ जानकारी दे सकता हूँ।" यह कहते हुए, वह पास ही रखी एक छोटी से मेज पर बैठ गया,  जिस पर एक पेन और स्याही रखी थी, पर कोई कागज नहीं था। उसने दराज में कुछ (पन्नों) की तलाश की, लेकिन उसे कुछ भी नहीं मिला।

---

[20] Massa-मास्टर या मालिक।

[21] जुपिटर कह रहा है कि कीड़े में सोने एक अलावा कुछ भी नहीं है।

“कोई बात नहीं।” काफी देर बाद वह बोला, “यह उत्तर दे देगा;” और उसने अपनी वेस्टकोट की जेब से एक (कागज़ के) टुकड़े को निकाला जो मुझे बहुत गन्दा फूलस्कैप[22] कागज लगा, और उसपर उसने कलम से उस कीड़े का एक कच्चा चित्र बनाया। जब वह ऐसा कर रहा था, मैं आग के समीप अपनी कुर्सी पर बैठा हाथ सेंकता रहा, क्योंकि मुझे अभी भी ठण्ड लग रही थी। जब उसका चित्र पूरा हो गया, उसने बिना उठे ही उस चित्र को मुझे थमाया। जैसे ही मैंने उसे लिया, एक तेज गुर्राहट सुनाई दी, जिसके बाद दरवाजे को खरोंचा जाने लगा। जुपिटर ने दरवाजे को खोला, एक विशालकाय *न्यूफाउंडलैंड*[23], जिसका लेग्रांड मालिक था, तेजी से अन्दर आया और आते ही मेरे कंधों के ऊपर उछल कर चढ़ गया और मुझपर प्रेम की बौछार कर दी; क्योंकि यहाँ पर हमारी पिछली मुलाकातों में मैंने उसपर काफी ध्यान दिया था। जब उसकी उछल-कूद बंद हुई, तो मैंने उस कागज की ओर देखा , और सच कहूं तो अपने मित्र द्वारा बनाये गये चित्र को देखकर मैं थोड़ी उलझन में पड़ गया।

“वैसे!” कुछ देर उसका अवलोकन करने के बाद मैंने कहा, “मुझे मानना पड़ेगा, यह *सच में* एक अनोखा भृंग है। मेरे लिए बिलकुल नया। जिन चीजों को मैंने देखा है उसमें यदि खोपड़ी

[22] Foolscap-16×13 इंच माप का, लिखने के लिए एक कागज़।

[23] Newfoundland-लेग्रांड का कुत्ता।



या *मौत के सिर*[24] (जिससे यह सबसे ज्यादा समानता रखता है) की बात न हो रही हो—तो मैंने इस जैसी कोई चीज पहले कभी नहीं देखी।"

"मौत का सिर!" लेग्रांड ने दोहराया—"ओह—हाँ—वैसे, बेशक कागज पर यह देखने में कुछ वैसा ही लगता है। ऊपर के दोनों काले धब्बे आँखों की तरह लगते हैं, न? और नीचे का लम्बा वाला काला धब्बा मुँह की तरह लगता है—और इसके अलावा इसका पूरा आकार एक अंडे जैसा है।"

"शायद ऐसा ही है" मैंने कहा; "पर, लेग्रांड मुझे कहते हुए संकोच हो रहा है कि तुम कोई चित्रकार नहीं हो। यदि मुझे उसके शारीरिक रूप-रंग के विषय में कोई राय कायम करनी है, तो मुझे कीड़े को खुद देखने तक का इंतजार करना होगा।"

"खैर, मुझे नहीं मालूम," वह थोड़ा चिढ़कर बोला," मैं ठीकठाक चित्र बना लेता हूँ—कम से कम इससे काम चल जाना चाहिए—मुझे अच्छी-खासी मास्टरी की डिग्री मिली है, और मैं जानता हूँ कि मैं बिल्कुल से बेवकूफ नहीं हूँ।"

"परन्तु तब, मेरे प्यारे दोस्त, तुम मजाक कर रहे हो।," मैंने कहा "यह एक ठीकठाक खोपड़ी है—वाकई, मैं कह सकता हूँ कि यह खोपड़ी, प्रकृति-विज्ञान के नमूनों के विषय में आम धारणा

---

[24] Death's head-ईसाई मान्यता में मौत का सिर इंसानी खोपड़ी जैसा होता है।

के अनुसार, एक बहुत ही शानदार नमूना है–और तुम्हारा भृंग, दुनिया में अपने जैसे अन्य नमूनों से सबसे अजीब भृंग होगा। अरे, इस चिह्न[25] से हममें बहुत रोमांचक-सा अन्धविश्वास पैदा हो सकता है[26]। मैं समझता हूँ कि तुम इस कीड़े को '*स्कैरेबेयस केप्यूट होमिनिस*'[27] या ऐसे ही किसी नाम से बुलाओगे–प्राकृतिक इतिहास में इससे मिलते-जुलते कई नाम हैं। लेकिन जिस प्रकार के ऐन्टेनों का तुमने जिक्र किया था वो कहाँ हैं?"

"ऐन्टेने!" लेग्रांड, जो बिना किसी ख़ास वजह के इस मुद्दे को लेकर गर्म होता लग रहा था, बोला; "मुझे पूरा यकीन है कि तुमने ऐन्टेनों को जरूर देखा होगा। मैंने उन्हें असली कीड़े जितना ही सुस्पष्ट बनाया है। और मैं समझता हूँ कि इतना काफी है।"

"अच्छा, ठीक है," मैंने कहा, "शायद तुमने उन ऐन्टेनों को बनाया है - फिर भी वे मुझे दिख नहीं रहे हैं;" और मैंने, उसके गुस्से को न भड़काने की इच्छा से, बिना कोई अतिरिक्त

---

[25] कीड़े की आकृति पर मौत के सिर का चिह्न।

[26] जैसे किसी चीज अथवा जीव पर कोई शुभ या अशुभ चिह्न बने होने पर लोग उससे अन्धविश्वास जोड़ने लगते हैं। यहाँ कथावाचक को पार्चमेंट पर बनी कीड़े की आकृति में खोपड़ी का चिह्न नजर आ रहा था, उसे लगता था कि इससे भी लोग किसी अन्धविश्वास को जोड़ेंगे।

[27] scarabæus caput hominis-आदमी की खोपड़ी वाला भृंग।

टिप्पणी किये उसे कागज थमा दिया। लेकिन घटनाओं ने जो मोड़ लिया था उससे मैं काफी चकित था। उसके खराब मिज़ाज ने मुझे उलझन में डाल दिया–और, जहाँ तक उस कीड़े के चित्र का सवाल था, वहाँ निश्चित तौर पर कोई ऐन्टेने नहीं दिख रहे थे, और पूरा (चित्र) *यकीनन मौत के सिर* की आम बनावट से काफी करीबी समानता रखता था।

उसने बहुत चिड़चिड़ाते हुए कागज़ ले लिया और उसे तोड़-मरोड़ कर वह प्रकटतः आग में फेंकने ही वाला था, जब आकृति पर एक आकस्मिक नजर ने अचानक उसका ध्यान खींच लिया। एक क्षण में उसका चेहरा बुरी तरह लाल हो गया–अगले ही क्षण, उतनी ही बुरी तरह सफेद पड़ गया। कुछ मिनटों तक वह वहीं बैठे-बैठे चित्र को सूक्ष्मता से जांचता रहा। काफी देर बाद वह उठा, टेबल से मोमबत्ती उठाई, और कमरे के सबसे दूर के कोने में रखे समुद्री (नाविकों के) बक्से पर खुद बैठने के लिए बढ़ा। यहाँ दोबारा उसने कागज़ को हर दिशा में घुमाते हुए उसका उत्सुकतापूर्वक निरीक्षण किया। हालाँकि उसने कुछ भी नहीं कहा; और उसके बर्ताव ने मुझे काफी चकित कर दिया था; फिर भी मैंने सोचा कि किसी भी टिप्पणी से उसकी मनोदशा की बढ़ती निराशा को बढ़ाना समझदारी नहीं होगी। शीघ्र ही, उसने अपने कोट की जेब से एक पर्स को निकाला, और कागज को सावधानी से उस पर्स में

रख दिया, और फिर दोनों चीजों को राइटिंग-डेस्क[28] में डालकर ताला लगा दिया। अब वह अपने बर्ताव में पहले से अधिक शांत हो गया था; उसके व्यवहार में उत्साह जो शुरुआत में था, अब बिलकुल गायब हो चुका था। फिर भी वह इतना उदास नहीं लग रहा था, जितना वह सोच में खोया था। जैसे-जैसे शाम बीतती गयी वह अपने ख्यालों में और भी ज्यादा खोता चला गया, जिससे मेरा कोई भी हास-परिहास उसे जगा नहीं सका। जैसा मैं पहले अक्सर किया करता था, मेरा झोपड़ी में रात गुजारने का विचार था लेकिन अपने मेजबान की ऐसी मनोदशा को देखकर मुझे विदा लेना उचित लगा। उसने मुझ पर रुकने के लिए दबाव नहीं डाला, लेकिन, जब मैं निकल रहा था तो उसने अपनी सामान्य सौहार्दता से भी अधिक सौहार्दता से मुझसे हाथ मिलाया।

इसके लगभग एक महीने बाद था (और इस अंतराल के दौरान मैं लेग्रांड से बिलकुल नहीं मिला) जब चार्ल्सटन में, मुझसे मिलने उसका नौकर, जुपिटर आया। मैंने इससे पहले कभी अच्छे-भले बूढ़े नीग्रो को इतना उदास नहीं देखा था, और मैं आशंकित हो गया कि मेरे मित्र पर कोई भारी मुसीबत आन पड़ी है।

[28] Writing-desk-लिखने वाली मेज

“अच्छा, जुप” मैंने कहा, “अब क्या हो गया?–तुम्हारे मालिक कैसे हैं?”

“वैसे, सच कहूं, मासा, तो वह इतने ठीक नहीं हैं, जितने होने चाहिए।”

“ठीक नहीं हैं! मुझे यह सुनकर वाकई खेद हुआ। उसे क्या शिकायत है?”

“यही! यही तो बात है!–वह कभी कोई शिकायत नहीं करते–पर जो भी है वह बहुत बीमार हैं।”

“*बहुत* बीमार, जुपिटर! -तुमने ऐसा तुरंत क्यों नहीं कहा? क्या उसने बिस्तर पकड़ रखा है?”

“नहीं, ऐसे वह नहीं है!–वह कहीं भी नहीं मिलते–बस यही बात है जो मुझे खटकती है–बेचारे मासा विल के लिए मेरा दिमाग बहुत बोझिल होने लगा है।”

“जुपिटर, मैं जानना चाहूंगा कि तुम किस विषय पर बात कर रहे हो। तुम कहते हो कि तुम्हारे मालिक बीमार हैं। क्या उसने तुम्हें यह नहीं बताया कि उसे क्या तकलीफ है?”

“वैसे, मासा, इस विषय पर परेशान होने का कोई फायदा नहीं है–मासा विल कुछ भी नहीं बताते कि उनके साथ क्या मसला है–लेकिन फिर भी पता नहीं क्या है, जिसकी तलाश में वह *भूत जैसे सफ़ेद* होकर, ध्यान एकाग्र किये और कंधे उचकाते

हुए यहाँ-वहाँ इस तरह भटकते रहते हैं[29]। और इसके अलावा वह हर समय एक *साइफन*[30] रखते हैं"–

"एक *क्या* रखता है, जुप?"

"मासा, वह स्लेट पर एक *साइफन* के साथ आकृतियों को रखते हैं–मेरे द्वारा देखी गयी सबसे अजीब आकृतियाँ। मैं आपसे कह रहा हूँ, मुझे डर लगने लगा है। अब हर समय मुझे उनकी गतिविधियों पर बहुत कड़ी नजर रखनी पड़ती है। अभी दूसरे दिन ही वह सूरज उगने से पहले चुपके से निकल गए और पूरे दिनभर बाहर थे। उनके आने पर उनकी पिटाई करने के लिए मैंने एक लम्बी छड़ी काटकर तैयार रखी थी--लेकिन मैं इतना मूर्ख हूँ कि मेरे पास इसके लिए कलेजा नहीं था—वह बहुत दयनीय दिख रहे थे[31]।

---

[29] but den what make him go bout looking dis here way, wid he head down and he soldiers up, and as white as a gose-जुपिटर कह रहा है कि उसे नहीं मालूम कि किस चीज की तलाश में लेग्रांड का ध्यान लगा रहता है, क्यों वह कंधे उचकाता रहता है और क्यों निस्तेज चेहरे के साथ इधर-उधर भटकता फिरता है?

[30] Syphon-जुपिटर 'साइफर'(cypher) को गलती से 'साईफन'(syphon) कह रहा है। 'साइफर' का अर्थ होता है सांकेतिक भाषा में छिपाई गई जानकारी। जबकि 'साइफन', दबाव द्वारा पानी को एक नाली के द्वारा खींचने की प्रक्रिया को कहा जाता है।

[31] जुपिटर कह रहा है कि वह अपने मालिक लेग्रांड को दिन भर बाहर घूमते रहने के लिए छड़ी से पिटाई करना चाहता था पर

“आंय?–क्या?–अच्छा ठीक है!–इस सब पर मैं सोचता हूँ कि अच्छा होगा तुम उस बेचारे आदमी से ज्यादा सख्ती न करो–उसकी पिटाई मत करना। जुपिटर, वह यह सब बहुत अच्छे से सह नहीं पायेगा–पर क्या तुम्हें कोई अंदाजा नहीं है कि किस वजह से यह *बीमारी*, या यूं कहूँ कि *बर्ताव में* यह बदलाव आया है? जब से मैं तुमसे पिछली बार मिला क्या तब से कोई अनहोनी हुई है?”

“नहीं, मासा, तब से कोई अनहोनी नहीं हुई है–मुझे डर है यह उससे पहले से था–यह उसी दिन था जब आप वहाँ थे।”

“कैसे? क्या मतलब है तुम्हारा?”

“मासा, मेरा मतलब है कि वह कीड़ा–वहाँ पर।”

“क्या?”

“वह कीड़ा–और मुझे पूरा यकीन है कि उस सोने के कीड़े ने मासा विल को उनके सिर के आसपास कहीं काट लिया है।”

“जुपिटर, तुम्हारे ऐसा मानने की वजह क्या है?”

“कीड़ा काफी पंजे मारता हैं, मासा, और मुँह भी। मैंने कभी इतने दुष्ट कीड़े को नहीं देखा। वह अपने पास आने वाली हर चीज को लात मारता और काटता है। मासा विल ने उसे उपद्रव

---

लेग्रांड के बीमारों जैसे रूप को देख कर उसकी ऐसा करने की हिम्मत नहीं हुई।

करते पकड़ लिया था, पर उन्हें बहुत जल्दी उसे छोड़ देना पड़ा, मैं आपको बता रहा हूँ - तभी वह समय था जब उसने उनको काट लिया। मुझे खुद बिलकुल भी उस कीड़े का मुँह देखना पसंद नहीं है, इसलिए मैंने उसे कभी अपनी अंगुलियों से नहीं पकड़ा, पर मैंने उसे कागज से उठा लिया, जो मुझे पास गिरा मिला था। मैंने उसे कागज में लपेटा और कागज़ का टुकड़ा उसके मुँह में ठूँस दिया–इसी तरह से हुआ था।"

"और तुम सोचते हो कि तुम्हारे मालिक को सचमुच कीड़े ने काटा था, और काटे जाने की वजह से वह बीमार हो गया है।"

"मैं इस बारे में कुछ सोचता नहीं हूँ--बल्कि मैं जानता हूँ। अगर ऐसा सोने के कीड़े के काटने की वजह से नहीं है, तो क्या वजह है कि वह सोने के बारे में सपने देखते रहते हैं? इससे पहले मैंने कभी उन सोने के कीड़ों के बारे में नहीं सुना।"

"लेकिन तुम यह कैसे जानते हो कि वह सोने के विषय में सपने देखता है?"

"मैं किस तरह से जानता हूँ?—इसलिए क्योंकि वह नींद में इस बारे में बोलते रहते हैं–इस तरह से मैं जानता हूँ।"

"वैसे, जुप, शायद तुम सही हो। पर आज कौन-सा शुभ अवसर हो गया जिसकी वजह से मुझे तुमसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ?"

"क्या मतलब, मासा?"

“क्या तुम लेग्रांड से मेरे लिए कोई सन्देश लाये हो?”

“नहीं, मासा, मैं यहाँ यह चीज लाया हूँ।” और यहाँ जुपिटर ने मुझे एक नोट थमा दिया जो इस तरह था:

मेरे प्रिय–,

अरे, मैं तुमसे इतने लम्बे समय से नहीं मिला? मैं आशा करता हूँ कि तुम इतने नासमझ नहीं हो कि मेरी किसी मामूली अशिष्टता का बुरा मान जाओ; लेकिन नहीं, यह संभव नहीं है।

जब से मैं तुमसे मिला हूँ, मुझे बड़ी चिंता हो रही है। मुझे तुम्हें कुछ बताना है, पर मुझे शायद ही मालूम है कि इसे कैसे बताऊँ, या क्या मुझे इसे बिलकुल भी बताना चाहिए।

पिछले कुछ दिनों से मैं बिलकुल ठीक नहीं हूँ। और बेचारा बूढ़ा जुप अपनी सद्भावनापूर्ण देखरेख से, मुझे लगभग इतना खिजाता है, कि उसे बर्दाश्त करना मुश्किल है। क्या तुम समझ सकते हो? उसने एक बड़ी छड़ी तैयार कर रखी थी, और जिससे मुझे वह दूसरे दिन, उसके पीछे चुपके से निकलने के लिए और अकेले सारा दिन मुख्य-भूभाग पर पहाड़ियों के बीच बिताने के लिए, सजा देना चाहता था। मुझे पूरा यकीन है कि मेरे बीमारों जैसे रूप ने मुझे पिटने से बचा लिया।

जब से हम मिले हैं मैंने अपनी आलमारी में किसी नई चीज का संग्रह नहीं किया है।

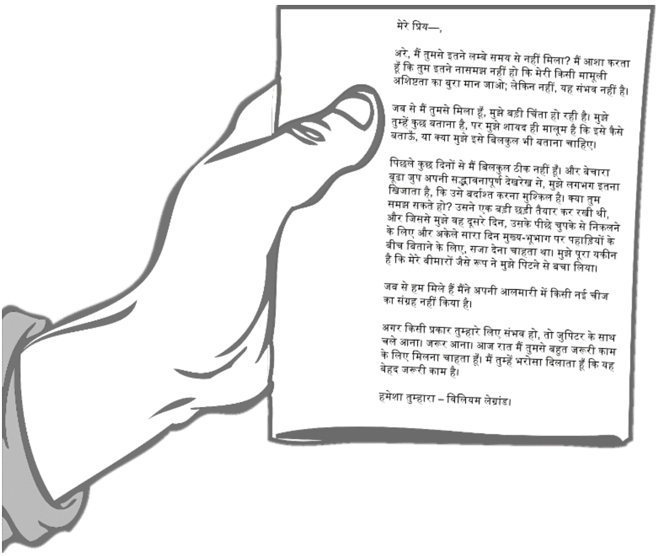
अगर किसी प्रकार तुम्हारे लिए संभव हो, तो जुपिटर के साथ चले आना। जरूर आना। आज रात मैं तुमसे बहुत जरूरी काम के लिए मिलना चाहता हूँ। मैं तुम्हें भरोसा दिलाता हूँ कि यह बेहद जरूरी काम है।

हमेशा तुम्हारा - विलियम लेग्रांड।

उस नोट की शैली में कुछ ऐसा था जिससे मुझे बड़ी बेचैनी होने लगी। इसकी शैली लेग्रांड से वस्तुतः बिलकुल अलग थी। न जाने वह क्या सपने देख रहा था? कौन-सी नई धुन उसके उत्तेजनशील मस्तिष्क पर हावी हो गयी थी? पता नहीं उसे कौन-सा अतिमहत्वपूर्ण काम करना है? उसके बारे में जुपिटर द्वारा दी गयी जानकारी से कुछ नहीं मालूम होता था। मुझे डर था कि कहीं बदकिस्मती के लगातार दबाव ने आखिरकार, मेरे दोस्त की सोचने-समझने की क्षमता पूरी तरह न बिगाड़ दी हो। इसलिए, बिना क्षणभर के संकोच के, मैं तुरंत नीग्रो के साथ जाने के लिए तैयार हो गया।

घाट पर पहुँचने पर, मेरी नजर, नाव (जिस पर हम चढ़ने वाले थे) में नीचे रखी हँसिया और तीन फावड़ों पर पड़ी, जो सब देखने में नए लगते थे।

“इन सब का क्या मतलब है, जुप?” मैंने पूछा।



मेरे प्रिय—,

अरे, मैं तुमसे इतने लम्बे समय से नहीं मिला? मैं आशा करता हूँ कि तुम इतने नासमझ नहीं हो कि मेरी किसी मामूली अशिष्टता का बुरा मान जाओ; लेकिन नहीं, यह संभव नहीं है।

जब से मैं तुमसे मिला हूँ, मुझे बड़ी चिंता हो रही है। मुझे तुम्हें कुछ बताना है, पर मुझे शायद ही मालूम है कि इसे कैसे बताऊँ, या क्या मुझे इसे बिलकुल भी बताना चाहिए।

पिछले कुछ दिनों से मैं बिलकुल ठीक नहीं हूँ। और बेचारा बूढ़ा जुप अपनी सद्भावनापूर्ण देखरेख से, मुझे लगभग इतना खिजाता है, कि उसे बर्दाश्त करना मुश्किल है। क्या तुम समझ सकते हो? उसने एक बड़ी छड़ी तैयार कर रखी थी, और जिससे मुझे वह दूसरे दिन, उसके पीछे चुपके से निकलने के लिए और अकेले सारा दिन मुख्य-भूभाग पर पहाड़ियों के बीच बिताने के लिए, सजा देना चाहता था। मुझे पूरा यकीन है कि मेरे बीमारों जैसे रूप ने मुझे पिटने से बचा लिया।

जब से हम मिले हैं मैंने अपनी आलमारी में किसी नई चीज का संग्रह नहीं किया है।

अगर किसी प्रकार तुम्हारे लिए संभव हो, तो जुपिटर के साथ चले आना। जरूर आना। आज रात मैं तुमसे बहुत जरूरी काम के लिए मिलना चाहता हूँ। मैं तुम्हें भरोसा दिलाता हूँ कि यह बेहद जरूरी काम है।

हमेशा तुम्हारा – विलियम लेग्रांड।

“यह हँसिया और फावड़े हैं, मासा।”

“बिलकुल सही। पर ये यहाँ क्या कर रहें हैं?”

“इस हँसिया और फावड़ों को कस्बे से खरीदने के लिए मासा विल ने मुझ पर दबाव डाला, और इनके लिए मुझे बहुत ढेर सारे पैसे देने पड़े।”

“पर यह क्या गोरखधंधा है, तुम्हारे ‘मासा विल’ इस हँसिया और फावड़ों से क्या करने वाले हैं?”

“मुझे इससे ज्यादा नहीं मालूम। और मुझपर धिक्कार होता, यदि मुझे ऐसा नहीं लगता कि उन्हें भी इससे ज्यादा नहीं पता है[32]। पर यह सब उस कीड़े के कारण है।”

यह पाकर कि जुपिटर (जिसकी सारी समझ केवल “उस कीड़े” के ख्याल में खोई थी) से कोई संतुष्टिजनक उत्तर नहीं मिलने वाला, मैंने अब नाव में कदम रखा और हम यात्रा पर निकल पड़े। एक बढ़िया और तेज हवा के साथ, हम जल्दी ही *मौल्ट्री किले* की उत्तरी दिशा की तरफ छोटी खोह से होकर गुजरने लगे। और फिर लगभग दो मील पैदल यात्रा हमें झोपड़ी तक ले आई। लगभग दोपहर के तीन बज रहे थे जब हम वहाँ पहुंचे। वहाँ लेग्रांड हम लोगों का बड़ी बेसब्री से इंतज़ार कर

---

[32] जुपिटर कह रहा है कि उसे नहीं मालूम, और उसे पूरा यकीन है कि उसके मासा विल को भी नहीं पता है कि वह इन चीजों का क्या करेंगे।

रहा था। उसने गर्मजोशी से मेरा हाथ पकड़ लिया जिससे मैं परेशान हो गया और मेरी पूर्वकल्पित आशंकाएँ और मजबूत हो गयीं। उसकी मुखाकृति भयंकर रूप से कांतिहीन थी, और उसकी गहरी-स्थित आँखें एक अप्राकृतिक चमक से मुझे लगातार घूरे जा रही थी। उसके स्वास्थ्य के विषय में कुछ पूछताछ करने के बाद (न जानते हुए कि क्या बोलना बेहतर होगा) मैंने उससे पूछा, कि क्या उसने अंततः *भृंग* को लेफ्टिनेंट जी से ले लिया है।

“ओह, हाँ।” उसने उत्तेजित दिखते हुए जवाब दिया, “उसे मैंने अगली सुबह ही उनसे ले लिया था। कोई भी प्रलोभन मुझे *भृंग* से अलग नहीं कर सकता। क्या तुम्हें पता है, जुपिटर उसके बारे में काफी सही है?”

“कैसे?” मन में बुरी आशंका लिए मैंने पूछा।

“कीड़े को *खरे सोने* का मानने में।” और इस बात को उसने पूरी गंभीरता के साथ कहा, जिसपर मैं अकथ्य रूप से चकित महसूस करने लगा।

“फिर से मेरी खानदानी सम्पत्ति लौटाकर,” विजयी मुस्कान के साथ वह आगे बोला, “यह कीड़ा मेरी किस्मत बना देगा। तब इसमें कैसा आश्चर्य है जो मैं इसको महत्व देता हूँ? जब किस्मत को सही लगता है कि मुझे यह मिले, तो मुझे बस इसका सही ढंग से इस्तेमाल करना है और मैं उस जगह पर

पहुँच जाऊंगा जहां सोना गड़ा हुआ है, जिसका यह *सूचक* है। जुपिटर, मुझे वह भृंग लाकर दे दो।"

"क्या! वह कीड़ा मासा? मैं उस कीड़े को बिलकुल नहीं छेड़ना चाहूँगा–आपको चाहिए तो खुद जाकर उसे ले लीजिये।" इसपर लेग्रांड गंभीरता और घमंड से उठा, और एक कांच की डिबिया (जिसमें भृंग बंद था) से उसको मेरे पास लाया। यह एक खूबसूरत भृंग था और उस समय के प्रकृतिविज्ञानियों के लिए अनजाना था–निश्चित तौर पर यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बहुत मूल्यवान था। इसके पिछले हिस्से के एक सिरे के समीप दो गोल काले धब्बे थे, और जिसमें से एक लम्बा वाला (धब्बा) दूसरे के समीप था। इसकी शल्क अत्यंत सख्त और चमकीली थी, जिससे चमकीले सोने-सा आभास होता था। कीड़े का वजन बहुत गौरतलब था, और, सारी चीजों का लिहाज करते हुए, मैं उसके बारे में जुपिटर की राय को शायद ही दोष दे सकता था; पर मैं चाहे कितनी भी कोशिश कर लूँ, मैं नहीं बता सकता कि लेग्रांड की उस राय से सहमति का क्या मतलब निकालना चाहिए।

"मैंने तुम्हें बुलावा भेजा था," लेग्रांड ने आडम्बरपूर्ण ढंग से कहा, जब मैंने कीड़े पर अपनी जांच पूरी कर ली, "मैंने तुम्हें इसलिए तलब किया था जिससे कि मुझे, भाग्य और कीड़े के सम्बन्ध में समझ विकसित करने में, तुम्हारी सलाह और सहायता प्राप्त हो सके।"



“मेरे प्यारे लेग्रांड,” उसे बीच में टोकते हुए, मैं चीखा, “तुम निश्चित रूप से बीमार हो। और तुम्हें थोड़े एहतियात बरतने चाहिए। तुम्हें बिस्तर पर जाना चाहिए। और जब तक कि तुम ठीक नहीं हो जाते, मैं कुछ दिनों तक तुम्हारे साथ रहूँगा। तुम्हें हल्का बुखार है और–”

“मेरी नब्ज महसूस करो,” वह बोला।

मैंने उसे महसूस किया, और, सच कहूँ तो मुझे बुखार के तनिक भी लक्षण नहीं मिले।

“पर बिना बुखार हुए भी, तुम बीमार हो सकते हो। केवल इस बार, तुम मुझे अपनी जाँच कर लेने दो जिससे मैं तुम्हारे लिए दवा बता सकूँ। सबसे पहले, बिस्तर पर लेट जाओ। उसके बाद–”

“तुम गलत समझ रहे हो,” वह बीच में बोल पड़ा, “मैं उतना ही अच्छा हूँ जितना मैं अपनी उत्तेजना में हो सकता हूँ (जिसका मैं अनुभव कर रहा हूँ)। अगर तुम वाकई मेरा भला चाहते हो, तो तुम इस उत्तेजना से मुझे छुटकारा दिलाओगे।”

“और यह कैसे किया जाएगा?”

“बहुत आसानी से। जुपिटर और मैं, मुख्य भू-भाग की पहाड़ियों पर एक अभियान पर जायेंगे। और, इस अभियान में हमें किसी ऐसे व्यक्ति की सहायता की जरूरत होगी जिसपर हम भरोसा कर सकें। तुम इकलौते ऐसे व्यक्ति हो जिस पर हम भरोसा

कर सकते हैं। चाहे हम सफल हों या असफल, लेकिन जो उत्तेजना तुम मुझमें इस समय महसूस कर रहे हो वह (हम सब में) बराबरी से शांत हो जायेगी[33]।"

"मैं किसी भी तरह तुम्हारी मदद करने का इच्छुक हूँ," मैंने जवाब दिया; "पर, क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि इस कीड़े का, तुम्हारे पहाड़ी पर जाने के अभियान से, कोई सम्बन्ध है?"

"बिलकुल।"

"तब, लेग्रांड, मैं इस तरह के किसी बेतुके काम का हिस्सा नहीं बन सकता हूँ।"

"मुझे अफ़सोस है—बहुत अफ़सोस है—क्योंकि (तब) हमें इसको करने की खुद ही कोशिश करनी होगी।"

"खुद ही कोशिश करो! यह आदमी निश्चित रूप से पागल है[34]! ... पर रुको! तुम्हारा कितने समय तक गायब रहने का इरादा है?"

"संभवतः पूरी रात भर। हम तुरंत रवाना होंगे, और हर हाल में, सूर्योदय तक वापस आ जायेंगे।"

---

[33] लेग्रांड कह रहा है कि सफलता की ख़ुशी या असफलता की निराशा से होनी वाली उत्तेजना, उन तीनों को बराबर होगी।
[34] कथावाचक लेग्रांड के बारे में बड़बड़ाते हुए कह रहा है।

“और क्या तुम अपनी नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए मुझे वचन देते हो कि जब तुम्हारा यह जुनून खत्म हो जाएगा, और कीड़े के मामले में (हे भगवान्!) तुम्हें तसल्ली हो जायेगी, तब तुम घर लौट आओगे। और तुम्हारे डॉक्टर की हैसियत से दिए गए, मेरे परामर्श का पूरी तरह पालन करोगे?”

“हाँ, मैं वचन देता हूँ। और अब हमें चलना चाहिए, क्योंकि हमारे पास गँवाने के लिए बिलकुल समय नहीं है।”

भारी मन से मैं अपने दोस्त के साथ चल पड़ा। हम लगभग चार बजे निकले—लेग्रांड, जुपिटर, हमारा कुत्ता और मैं खुद। जुपिटर अपने साथ हँसिया और फावड़े ले चल रहा था। मुझे ऐसा लगा कि वह ऐसा काम की कठिनाई या लेग्रांड को खुश करने से ज्यादा, किसी भी औजार को अपने मालिक की पहुँच के भरोसे में जाने के डर की वजह से कर रहा था। वह सभी (चीजों) को खुद उठाने पर अड़ा था। उसका व्यवहार अत्यंत हठपूर्ण था, और “वह शैतानी कीड़ा” एकमात्र शब्द थे जो यात्रा के दौरान उसके होंठों से निकलते रहे। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैंने दो ‘डार्क लैंटर्न’[35] की जिम्मेदारी ले रखी थी, जबकि लेग्रांड ने खुद को भृंग से संतुष्ट कर रखा था, जिसे उसने व्हिप-कोर्ड[36] के टुकड़े से बाँध रखा था; और जिसे वह एक

---

[35] Dark lantern-19वीं शताब्दी में प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का लालटेन जिसकी रौशनी केवल एक दिशा में आती थी।

[36] Whipcord-चाबुक की डोरी।

बाजीगर की तरह इधर-उधर घुमाते हुए जा रहा था। जब मैंने अपने दोस्त की बुद्धि भ्रष्ट होने का यह अंतिम स्पष्ट प्रमाण देखा, मैं मुश्किल से ही अपने आँसुओं को रोक सका। फिर भी, कम-से-कम वर्तमान के लिए (या उस समय तक के लिए जब तक मैं थोड़े और सशक्त कदम नहीं उठा सकता हूँ, जिनकी सफलता की गुंजाइश हो) मैंने उसकी कल्पना को मानना सबसे उचित समझा। इस दौरान मैंने उसे उसके अभियान के मकसद के सम्बन्ध में समझाने का प्रयास किया, पर सब व्यर्थ गया। मुझे अपने साथ आने के लिए राजी करने के बाद, वह मुझसे किसी अन्य आम विषय पर बातचीत करने के लिए अनिच्छुक लग रहा था, और मेरे हर प्रश्न का, सिवाय “हम देख लेंगे!” के, कोई जवाब नहीं होता।

हमने नाव द्वारा द्वीप के मुहाने पर बनी संकरी खाड़ी को पार किया, और, हम मुख्य भूमि के तटीय किनारे पर स्थित ऊँची जमीन पर चढ़ने लगे, वहाँ से हम उत्तर-पश्चिमी दिशा में देश के सबसे बड़े और वृहद निर्जन और जंगली क्षेत्र से होते हुए आगे बढ़ने लगे, जहाँ किसी आदमी के पैरों के निशान नहीं दिखते थे। लेग्रांड दृढ़ता से मार्गदर्शन करने लगा। समय-समय पर, वह केवल क्षणभर के लिए, ख़ास स्थलचिह्नों पर गौर करने के लिए रुकता, जो उसकी खुद की खोज लगते थे, जब वह पहले आया रहा होगा।

इस तरह हम लगभग दो घंटे तक यात्रा करते रहे, और सूरज डूब ही रहा था, जब हमने अब तक देखी गई निराशा से भी

अधिक निराशाजनक क्षेत्र में प्रवेश किया। लगभग अगम्य-पहाड़ी के शीर्ष के समीप, यह एक तरह की पठार थी, जिसके तल से लेकर शीर्ष तक घने पेड़ थे, और जिसकी भूमि पर बीच-बीच में विशालकाय ऊबड़-खाबड़ चट्टानें अव्यवस्थित पड़ी दिखती थीं, और कई मामलों में, चट्टानें केवल पेड़ों (जिनपर वह टिकी हुई थीं) की वजह से घाटियों में गिरने से रुकती थी। गहरे गड्ढे, अलग-अलग दिशाओं में, दृश्य को लगातार कठोर गंभीरता का वातावरण दे रहे थे।

*प्राकृतिक मंच*[37] (जिसपर हम मुश्किल से चढ़े थे) पर घनी कंटीली झाड़ियाँ उगी हुई थी, जिससे हमने जल्दी ही पाया कि हँसिया के बगैर हमारा जबरन आगे बढ़ना असंभव होता। इसके बाद जुपिटर अपने मालिक के निर्देश पर, एक बहुत ऊंचे *ट्यूलिप के वृक्ष* के तल तक जाने वाले रास्ते को साफ़ करने के लिए आगे बढ़ा, जो कोई आठ या दस *शाहबलूत* के पेड़ के साथ बराबर ऊँचाई पर खड़ा था, और जो उन सब से और उन बाकी सारे पेड़ों से (जिन्हें मैंने तब तक देखा था), पत्तियों और आकार की खूबसूरती में, चौड़ी फैली शाखाओं में, अपनी बाह्य-आकृति के व्यापक वैभव में बहुत आगे था। जब हम इस पेड़ तक पहुँचे, लेग्रांड जुपिटर की ओर मुड़ा, और उससे पूछा कि क्या वह उस पेड़ पर चढ़ सकता है। प्रश्न से बूढा जुपिटर थोड़ा असमंजस में लग रहा था, और कुछ क्षणों तक

[37] पठार।



उसने कोई जवाब नहीं दिया। काफी देर बाद वह पेड़ के समीप गया, उसके विशालकाय तने के इर्दगिर्द धीरे-धीरे चक्कर लगाकर उसने उस पेड़ की बहुत ध्यान से जांच-पड़ताल की। जब उसने अपना सूक्ष्म-परीक्षण पूरा कर लिया तो उसने केवल इतना कहा,

“हाँ, मासा, जुप ने अपनी जिन्दगी में जिस भी पेड़ को देखा है, वह उस पर चढ़ने में जरूर कामयाब हुआ है।”

“तो जितनी जल्दी हो सके तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ, क्योंकि जल्दी ही यहाँ *उस चीज* को देखने के लिए बहुत अँधेरा होने वाला है, जिसके लिए हम यहाँ आयें है।”

“मासा, मुझे कितना ऊपर जाना होगा?” जुपिटर ने पूछा।

“पहले तुम मुख्य तने के ऊपर जाओ, और तब मैं बताऊँगा कि तुम्हें किधर जाना है–और यहाँ–रुको! यह कीड़ा अपने साथ लेते जाओ।”

“कीड़ा, मासा विल!–सोने का कीड़ा!” निराशा से पीछे ठिठकते हुए नीग्रो चिल्लाया–“इस कीड़े को किसलिए पेड़ के ऊपर ले जाऊँ?–लानत है, यदि मैं ऐसा करता हूँ!”

“जुप, अगर तुम्हारे जैसा लम्बा चौड़ा नीग्रो, इस मासूम, नन्हे, मृत कीड़े को देख कर डर रहा है, तो तुम इसे इस डोरी के सहारे ऊपर ले जा सकते हो–पर, अगर तुम इसे किसी तरह

अपने साथ ऊपर नहीं ले जाते, तो मुझे मजबूरन इस फावड़े से तुम्हारे सिर को फोड़ना पड़ेगा।"

"अब क्या हुआ, मासा?" स्पष्ट रूप से शर्मिंदगी द्वारा राज़ी किये जाने पर जुप बोला; "हमेशा बूढ़े नीग्रो से बहस करना चाहते हैं। जो भी हो, मैं केवल मजाक कर रहा था। मैं, और इस कीड़े से डरूँ! मुझे इस कीड़े की क्या परवाह है?" यहाँ उसने सावधानी से डोरी के दूरतम सिरे को पकड़ा, और, उस कीड़े से खुद को दूर (जितना उन परिस्थितियों में संभव था) रखते हुए, पेड़ पर चढ़ने के लिए तैयार हो गया।

युवावस्था में, ट्यूलिप के पेड़ (या *लिरियोडेंड्रन ट्यूलिपफेरम*[38], जो अमेरिकी *वन के निवासियों*[39] में सबसे भव्य होता है) का तना असामान्य रूप से चिकना होता है, और अक्सर बिना किसी *आनुषंगिक शाखा*[40] के बहुत ऊंचाई तक सीधे उगता है। लेकिन, परिपक्व होने पर, जब इसमें से कई छोटी शाखाएं तने के पास से निकलने लगती हैं, तब इसकी छाल गांठदार और ऊबड़-खाबड़ हो जाती है। इसलिए वर्तमान मामले में, वास्तविकता में पेड़ पर चढ़ने में कठिनाई उतनी नहीं थी, जितनी देखने में प्रतीत होती थी। विशालकाय बेलनाकार पेड़

---

[38] Liriodendron Tulipferum-अमरीकी ट्यूलिप के वृक्ष का वैज्ञानिक नाम।

[39] कथावाचक वन में होने वाले जीव-जंतु, वृक्ष, वनस्पति, इत्यादि के सन्दर्भ में कह रहा है।

[40] पेड़ की मुख्य शाखा से निकली हुई अतिरिक्त शाखा।

के जितना करीब हो सकता था, अपनी बाँहों और घुटनों को चिपकाकर, अपने हाथ से कुछ निकली हुई शाखाओं को पकड़कर, और अन्य शाखाओं पर अपने पैर के नंगे-पंजों को टिका कर *जुपिटर* (एक या दो बार गिरने से बाल-बाल बचने के उपरान्त) काफी देर जूझने के बाद, पहली बड़ी शाखा पर पहुँचा, और लगभग अपने सारे काम को ख़त्म मानता लग रहा था। हालाँकि *आरोही*[41] जमीन से लगभग साठ या सत्तर फीट की ऊंचाई पर था, इस बहादुरी के काम में जो वास्तविक जोखिम था, अब ख़त्म हो चुका था।

“मासा विल, अब मैं किस दिशा में आगे बढ़ूँ?” उसने पूछा।

“सबसे बड़ी शाखा पर बढ़ते जाओ–यह जो इस तरफ है,” लेग्रांड ने कहा। नीग्रो जुपिटर ने तुरंत (पर स्पष्ट रूप से थोड़ी मुश्किल से) उसकी आज्ञा का पालन किया; वह ऊंचे और ऊंचे चढ़ता गया, जब तक कि उसकी दुबकी हुई आकृति को घेरने वाली घनी पत्तियों से, उसकी झलक मिलनी बंद नहीं हो गयी। जल्दी ही उसकी आवाज, एक पुकार[42] की तरह आई।

“अभी मुझे और कितना ऊपर जाना होगा?”

“तुम कितनी ऊंचाई पर हो?” लेग्रांड ने पूछा।

---

[41] जुपिटर।

[42] Halloo-हेल्लो।

“इतना ऊपर,” नीग्रो ने जवाब दिया, “कि पेड़ के ऊपर से मुझे आसमान दिखाई दे रहा है।”

“आसमान को छोड़ो, और उसपर ध्यान दो, जो मैं कह रहा हूँ। तने के नीचे देखो और गिनो कि इस तरफ तुम्हारे नीचे कितनी शाखाएं हैं। तुमने कितनी शाखाओं को पार किया है?”

“एक, दो, तीन, चार, पाँच—मासा, मैंने इस तरफ पांच बड़ी शाखाओं को पार किया है।”

“तब एक शाखा और ऊपर चढ़ो।”

कुछ मिनटों बाद फिर से आवाज सुनाई दी, कि वह सातवीं शाखा पर पहुँच गया है।

“अब, जुप” लेग्रांड स्पष्ट रूप से काफी उत्साहित होते हुए चीखा, “मैं चाहता हूँ कि तुम उस शाखा पर जितना बाहर निकल सकते हो, जाओ। अगर तुम्हें कोई अजीब चीज दिखे, तो मुझे बताना।”

इस समय तक अपने बेचारे दोस्त के पागलपन के बारे में, जो थोड़ा संदेह मुझमें पनप रहा था, आखिरकार शांत हो चुका था। मेरे पास उसे पागलपन से ग्रस्त मानने के सिवाय कोई चारा नहीं था, और मैं उसे घर ले जाने के लिए गंभीर रूप से चिंतित हो गया। जब मैं मनन कर रहा था कि क्या करना सबसे उचित होगा, जुपिटर की आवाज फिर से सुनाई दी।

“इस शाखा पर ज्यादा आगे जाने में मुझे बहुत डर लग रहा है - यह लगभग पूरी तरह बेजान शाखा है।”

“क्या तुमने उसे *बेजान* शाखा कहा, जुपिटर,” लेग्रांड कांपती हुई आवाज में चिल्लाया।

“हाँ, मासा, यह *दरवाजे की कील*[43] जैसी बेजान है—इसका पूरी तरह काम तमाम हो गया है—यहाँ इसकी जान निकल गई है।”

“हे भगवान्, अब मुझे क्या करना चाहिए?” लेग्रांड ने प्रकटतः अत्यधिक निराशा से पूछा।

“करना चाहिए?” बोलने का एक मौका मिलने से खुश होकर मैंने कहा, “अरे, घर चलो और अपने बिस्तर पर आराम करो। *करना चाहिए* – यह (तुमने) एक अच्छी बात कही! काफी देर हो रही है, और, इसके अलावा क्या तुम्हें अपना वायदा याद है?”

“जुपिटर,” बिना मुझपर ध्यान दिए वह चिल्लाया, “क्या तुम मुझे सुन सकते हो?”

“हाँ, मासा, मैं आपको हमेशा जैसा ही साफ़ सुन सकता हूँ।”

[43] Dead as doornail-एक अंग्रेजी मुहावरा जिसका अर्थ होता है “पूरी तरह से मृत”।

“तो, अपनी छुरी से लकड़ी की अच्छे-से जांच करो, और देखो क्या तुम्हें वह बहुत सड़ी तो नहीं लग रही है?”

“यह निश्चित रूप से सड़ी है, मासा,” कुछ क्षणों में जुपिटर ने जवाब दिया,“ पर इतनी ज्यादा नहीं सड़ी है, जितनी हो सकती है। इतना सही है कि बिना कीड़े के मैं खुद शाखा पर चढ़ने का जोखिम ले सकता हूँ।”

“तुम खुद! – क्या मतलब है तुम्हारा?”

“मेरा मतलब इस कीड़े से है। यह कीड़ा बहुत भारी है। मान लीजिये मैं इस कीड़े को नीचे गिरा देता हूँ, तब शाखा मुझ अकेले *निगर*[44] के वजन से नहीं टूटेगी।”

“तुम बहुत ही बदमाश हो!” लेग्रांड स्पष्ट रूप से काफी चिंतामुक्त होते हुए चिल्लाया, “मुझे इस तरह की बकवास सुनाने का तुम्हारा मतलब क्या है? अच्छी तरह जान लो, जैसे ही तुमसे वह कीड़ा गिरा मैं तुम्हारी गर्दन तोड़ दूंगा। इधर देखो, जुपिटर, क्या तुम मुझे सुन रहे हो?”

“हाँ, मासा, इस तरह (मुझ) बेचारे *निगर* पर चिल्लाने की जरूरत नहीं है।”

“खैर! अब सुनो!–जहाँ तक तुम्हें सुरक्षित लगे, अगर तुम शाखा पर चढ़ने का साहस करते हो और उस कीड़े को गिराते नहीं

---

[44] Nigger-नीग्रो।

हो, तो जैसे ही तुम पेड़ से नीचे उतरोगे मैं तुम्हें चांदी का डॉलर दूंगा।"

"सौदा पक्का रहा—मैं जा रहा हूँ, मासा विल" जुपिटर ने तुरंत ही उत्तर दिया—"अब लगभग सि_सिरे तक पहुँच गया हूँ।"

"*सिरे तक पहुँच गये!*" यहाँ लेग्रांड लगभग चीख पड़ा "क्या तुम कह रहे हो कि तुम शाखा के सिरे तक पहुँच गये हो?"

"जल्दी ही पहुँच जाऊँगा, मासा, —ओ-ओ-ओ-ओ-ओह! हे ईश्वर-दया करो! यहाँ इस पेड़ पर यह क्या है?"

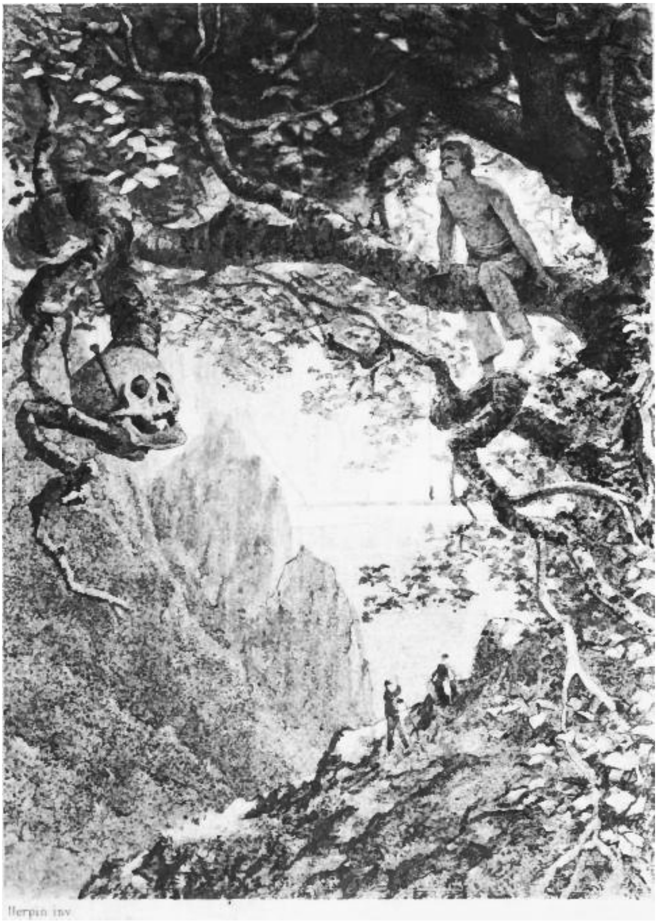
"तो!" लेग्रांड बहुत खुश होते हुए चिल्लाया, "वहाँ क्या है?"

"अरे, यह कुछ नहीं बस एक इंसानी खोपड़ी है—किसी ने इसे पेड़ के ऊपर रख दिया है, और कौवे इसपर के मांस के हर टुकड़े को निगल चुके हैं।"

"तुमने कहा, एक खोपड़ी! – बहुत अच्छे! —यह शाखा में किस प्रकार अटकी है?—उसे किसने संभाला हुआ है?"

"बिलकुल, मासा; मुझे देखना होगा। अरे, यहाँ बड़ी अजीब परिस्थिति है, आश्चर्यजनक—इस खोपड़ी में एक बहुत बड़ा कीला है, जिसने इसे इस पेड़ पर अटकाया हुआ है।"

"अच्छा अब, जुपिटर, बिलकुल वैसा ही करो जैसा मैं तुमसे कहता हूँ—क्या तुम सुन रहे हो?"


Herpin inv

“हाँ मासा!”

“तब, ध्यान से सुनो!—खोपड़ी की बायीं आँख को खोजो।”

“हम्म! ओह! यह अच्छा है! अरे, इसकी तो कोई भी आँख नहीं बची है।”

“लानत है, तुम्हारी बेवकूफी पर! क्या तुम अपने दाहिने और बायें हाथ में अंतर जानते हो?

“हाँ, मैं यह जानता हूँ—मुझे इस बारे में सब पता है—यह मेरा बायाँ हाथ है जिससे मैं लकड़ी काटता हूँ।”

“बेशक! तुम बायें-हाथ से सारे काम करते हो। और तुम्हारी बायीं आँख भी उसी तरफ है जिधर तुम्हारा बायाँ हाथ है। अब, मैं समझता हूँ, कि तुम उस खोपड़ी की बायीं आँख को, या उस स्थान को ढूँढ सकते हो जिधर बायीं आँख रही होगी। क्या तुम्हें वह मिली?”

यहाँ एक लम्बी चुप्पी हो गयी। काफी देर बाद नीग्रो ने पूछा,

“क्या इस खोपड़ी की बायीं आँख उसी तरफ है, जिधर इस खोपड़ी का बायाँ हाथ है?—क्योंकि इस खोपड़ी के साथ कोई हाथ नहीं है—चलो छोड़ो! मुझे अब इसकी बायीं आँख मिल गयी है—यह रही बायीं आँख! मैं इसके साथ क्या करूं?”

“जहाँ तक डोरी जा सके, उस (छेद) में से कीड़े को डाल दो–पर सावधान रहना और डोरी पर से अपनी पकड़ ढीली मत करना।”

“यह सब हो गया, मासा विल। इस छेद में कीड़े को डालना बहुत आसान था–अब उसको नीचे से देखते रहिएगा!”

“ठीक है!–अब कुछ मिनटों तक जैसे हो वैसे ही रहो।”

इस बातचीत के दौरान जुपिटर के शरीर का कोई भी हिस्सा नहीं दिख रहा था। पर वह कीड़ा, जो नीचे आया, अब डोरी के सिरे पर दिख रहा था, और डूबते सूरज की अंतिम किरणों में, चमचमाते सोने के गोले जैसा चमक रहा था। सूरज की कुछ किरणें अभी भी उस ऊंची-जगह को मद्धिमता से प्रकाशित कर रही थी, जिस पर हम खड़े थे। वह भृंग शाखाओं से दूर अलग लटक रहा था, और यदि उसे गिरने दिया जाता, तो वह हमारे क़दमों पर ही गिरता। लेग्रांड ने तुरंत हँसिया को लिया, और उससे कीड़े के ठीक नीचे, तीन या चार गज *व्यास*[45] की गोलाई में जगह को साफ़ कर दिया, और इसे करने के बाद, जुपिटर को डोरी छोड़ने और पेड़ से नीचे आने को कहा।

---

[45] Diameter-एक सीधी रेखा जो किसी वृत्त के गोल क्षेत्र के बीचोबीच होती हुई गई हो और जिसके दोनों सिरे वृत्त की परिधि से मिले हों।



ठीक उस जगह पर जहां वह कीड़ा गिरा, बहुत ही बारीकी से एक खूँटी जमीन में गाड़कर, मेरे दोस्त ने अब अपनी जेब से एक इंची-टेप[46] निकाला। निकटतम पेड़ के तने से उसका एक सिरा बाँधकर, उसे तब तक खोलता रहा जब तक कि वह खूंटे तक नहीं पहुँच गया, और वहाँ से उसे (खूंटे और पेड़ से बने बिन्दुओं द्वारा निर्मित दिशा में) पचास फीट की दूरी तक और आगे बढ़ाता रहा–(जिस दौरान) जुपिटर कंटीली झाड़ियों को हँसिया से साफ़ करता रहा। इस तरह पहुँचे गए स्थान पर, एक दूसरे खूंटे को गाड़ दिया गया, और इसको केंद्र मानते हुए लगभग चार फीट के *व्यास* का गोल घेरा इर्दगिर्द खींचा गया। अब खुद एक फावड़े को लेकर, और एक-एक फावड़ा मुझे और जुपिटर को देकर, लेग्रांड ने हमसे अनुरोध किया कि हमें जितनी जल्दी हो सके खुदाई शुरू करनी चाहिए। सच कहूं, मुझे कभी भी यह सब करना कुछ ख़ास पसंद नहीं था। और क्योंकि रात होने वाली थी और पहले से की गयी मेहनत से मैं काफी थका महसूस कर रहा था, ठीक उस समय, मुझे उसे मना करने में बहुत ख़ुशी होती। लेकिन मुझे बचने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा था, और मुझे डर था कि एक इनकार से कहीं मेरे बेचारे दोस्त का मानसिक संतुलन न बिगड़ जाए। अगर मैं, वाकई, जुपिटर की सहायता पर आश्रित हो सकता, तो मैं पगले[47]

---

[46] Tape-measure-दूरी मापने वाला टेप।

[47] लेग्रांड।

को जबरन घर ले जाने में जरा भी संकोच नहीं करता। लेकिन किसी भी परिस्थिति में, उसके मालिक से शारीरिक जबरदस्ती करने में मदद की अपेक्षा करने के लिए, मैं जुपिटर के स्वभाव से बहुत अच्छे से वाकिफ था[48]। मुझे कोई संदेह नहीं था कि लेग्रांड, गड़े हुए धन के बारे में *असंख्य दक्षिणी अन्धविश्वासों*[49] में से किसी एक से प्रभावित हो गया था, और भृंग की खोज या शायद, जुपिटर की उसे "असली सोने का कीड़ा" बताने की जिद से लेग्रांड की इस कल्पना को आधार मिल गया था। पागलपन से प्रभावित दिमाग, ऐसी फुसलाहट से आसानी से प्रभावित हो जाता है–खासतौर से तब जब दिमाग में मनपसंद पूर्वकल्पित विचार गूँज रहे हों। और तब मुझे *बेचारे आदमी*[50] का भाषण याद आया जब उसने उस कीड़े को "अपनी किस्मत का सूचक" बताया था। दुर्भाग्यवश इन सब से, मैं परेशान और उलझन

---

[48] कथावाचक कह रहा है कि वह जुपिटर के स्वभाव को अच्छी तरह जानता है। लेग्रांड को जबरन घर ले जाने की कोशिश में उसे जुपिटर से कोई मदद नहीं मिलने वाली।

[49] Southern superstitions-दक्षिणी यूनाइटेड स्टेट्स(U.S.A.) में माना जाता था कि जहाँ लोग खजाने को गाड़ते हैं, वहाँ ऊपर जलती हुई रौशनी दिखती है जिसे *फिफोलेट (fifolet)* कहा जाता है। संभवतः इस अन्धविश्वास की उत्पत्ति दलदली इलाकों में निकलने वाली रासायनिक गैसें रही होंगी जो रात के अँधेरे में देखने में जलती हुई रौशनी जैसी लगती है।

[50] लेग्रांड।



में था, लेकिन, काफी देर बाद, मैंने स्वेच्छा से काम करने का निश्चय किया। मैंने निर्णय किया कि मैं अपनी मर्जी से गड्ढे की खुदाई करूँगा, और इस तरह जल्दी ही, दृश्यमान साक्ष्य से उसके द्वारा पाले जाने वाले भ्रम को साबित कर दूंगा।

लालटेनों के जलाए जाने से, हम सब उत्साह (जो इससे किसी ज्यादा तर्कसंगत मकसद के लिए उपयुक्त था) के साथ काम करने में लग गए। और, जब लालटेनों की चमक हमपर और औजारों पर पड़ी, मैं खुद को यह कल्पना करने से रोक नहीं पाया कि हम कितना विचित्र समूह बनाते थे, और किसी अजनबी (जो अगर संयोग से हमारे काम की जगह पर अप्रत्याशित मिल जाता) को हमारा काम कितना विचित्र और संदेहपूर्ण लगता।

हम पूरे लगातार दो घंटे तक खुदाई करते रहे। बातचीत कम हुई; और हमारी मुख्य घबराहट *कुत्ते* के चीखने-चिल्लाने की वजह से थी, जो हमारे काम में बहुत रुचि ले रहा था। काफी देर बाद, वह इतना बेकाबू हो गया कि *हम* डरने लगे कि कहीं उससे अड़ोस-पड़ोस के कुछ खानाबदोशों को न पता लग जाए;– या, यूं कहना बेहतर होगा, कि यह *लेग्रांड* का अंदेशा था। रही बात मेरी, तो मैं किसी भी बाधा से खुश होता जो मुझे *भटकते आदमी*[51] को घर वापस लौटाने में सक्षम बनाती। काफी समय

[51] लेग्रांड।

बाद, शोर को जुपिटर द्वारा बहुत प्रभावशाली ढंग से शांत कर दिया गया। उसने गड्ढे से निकलकर, सोची-समझी दृढ़ता से जानवर के मुंह को अपने ससपेंडर्स[52] से बाँध दिया, और इसके बाद एक गंभीर *दबी हुई हँसी* के साथ अपने काम पर लौट आया।

*कथित समय*[53] बीतने तक, हम पांच फीट की गहराई तक पहुँच चुके थे, लेकिन फिर भी हमें वहाँ किसी खजाने के गड़े होने का लक्षण नहीं दिखा। परिणामस्वरूप एक आम चुप्पी छा गयी, और मैं आशा करने लगा कि इस तमाशे का अंत अब समीप था। फिर भी, लेग्रांड ने अपनी भौंहों को सोचते हुए पोंछा और फिर से खोदना आरम्भ किया हालाँकि वह स्पष्ट रूप से काफी उद्विग्न था। हम लोगों ने चार फीट व्यास कि पूरी गोलाई की खुदाई कर ली थी, और अब हमने थोड़ी सीमा बढ़ाई, और हम दो फीट गहराई तक और चले गए। फिर भी कुछ नहीं दिखा। *सोने का खोजी*[54] (जिससे मुझे सच में सहानुभूति थी) काफी देर बाद चेहरे-मोहरे पर अत्यधिक मायूसी की छाप लिए गड्ढे से कठिनाई से निकला और अपने कोट को सुस्ती और अनिच्छा से पहनने के लिए बढ़ा जिसे उसने काम की शुरुआत में उतार फेंका था। इस दौरान मैंने कोई टिप्पणी नहीं की। जुपिटर अपने मालिक के

---

[52] Suspenders-पतलून बांधने वाला पट्टे।

[53] दो घंटे।

[54] लेग्रांड।

इशारे पर, अपने औजारों को इकट्ठा करने लगा। यह किये जाने और कुत्ते के मुंह से पट्टा हटाये जाने के बाद, हम गहरी चुप्पी के साथ घर जाने के लिए मुड़े।

इस दिशा में हमने मुश्किल से दर्जनभर कदम लिए थे जब लेग्रांड एक ऊंचे स्वर में अपशब्द कहते हुए लम्बे कदम से चलकर जुपिटर के पास आया और उसको कॉलर से दबोच लिया। आश्चर्यचकित नीग्रो की आँखें और मुँह पूरी तरह खुला रह गया, फावड़े गिर गए, और वह अपने घुटनों के बल गिर पड़ा।

“बदमाश,” लेग्रांड ने भिंचे दांतों के बीच से अल्फ़ाजों को फुफकारते हुए कहा - “तुम नरक के काले दुष्ट हो! - बोलो, मैं तुमसे कहता हूँ! –बिना झूठ बोले, मुझे तुरंत जवाब दो! –कौन सी–कौन सी आँख तुम्हारी बायीं आँख है?”

“ओह, हे भगवान्, मासा विल! क्या वाकई में, यह मेरी बायीं आँख नहीं है?” अपनी दाहिनी आँख पर हाथ रखते हुए भयभीत जुपिटर चिल्लाया और उसे वहाँ इस व्याकुलता से रोके रखा, जैसे उसे डर था कि कहीं उसका मालिक उसकी आँख पर तुरंत वार करने की कोशिश न करे।

“मुझे ऐसा ही लगा! –मैं जानता था! हुर्रे!” लेग्रांड जुपिटर को छोड़ते हुए और उछलते-कूदते हुए चिल्लाया, जिससे उसका

सेवक[55] अपने घुटनों पर से उठा, और चुपचाप कभी मुझे और कभी अपने मालिक को आश्चर्य से देखता रहा।

“आओ! हमें वापस चलना चाहिए,” लेग्रांड ने कहा “अभी भी खेल खत्म नहीं हुआ है;” और वह फिर से ट्यूलिप के पेड़ की तरफ जाने वाले रास्ते का नेतृत्व करने लगा।

“जुपिटर,” जब हम पेड़ के नीचे पहुंचे तो उसने कहा, “इधर आओ! क्या शाखा पर कील से गड़ी खोपड़ी का मुख बाहर की तरफ था, या शाखा की तरफ?”

“मासा, मुख बाहर की तरफ था, जिस वजह से कौवे बिना किसी मुश्किल के आँखों पर चोट पहुँचा सके थे।”

“अच्छा तो, क्या वो ये वाली आँख थी या दूसरी वाली जिससे तुमने कीड़े को गिराया था?”—यहाँ लेग्रांड ने बारी-बारी से जुपिटर की दोनों आँखों को छुआ।

“मासा, यह वाली आँख थी—बायीं आँख—जैसा आपने मुझसे कहा था,” और यह उसकी दायीं आँख थी जिसकी तरफ नीग्रो ने इंगित किया।

“इतना काफी है—हमें इसकी दोबारा कोशिश करनी होगी।”

यहाँ अब अपने दोस्त के पागलपन में मैंने देखा (या मैं कल्पना कर रहा था कि मैंने देखा) पद्धति के कुछ लक्षण थे। उसने

[55] जुपिटर।

पेड़ के करीब का खूँटा हटाकर अपने पूर्व स्थान के लगभग तीन इंच पश्चिम की ओर कर दिया। अब, पहले की तरह, पेड़ के तने के निकटतम बिंदु से इंची-टेप लेकर और सीधी रेखा में पचास फीट की दूरी तक उसे बढ़ाते रहने के बाद, एक जगह को चिह्नित किया गया, जो उस जगह (जहाँ हम खुदाई कर रहे थे) से कई गज की दूरी पर था।

नए स्थान के इर्दगिर्द, पहले से कुछ बड़ा गोल-घेरा खींचा गया, और हम फावड़ों के साथ फिर से काम पर लग गए। मैं बुरी तरह से थका हुआ था, लेकिन, मैं (बिना अपनी सोच के बदलने की वजह जाने) थोपे गये काम के प्रति कोई ख़ास घृणा नहीं महसूस कर रहा था। मैं बिना किसी ख़ास वजह के काफी रुचि ले रहा था–*बल्कि,* मैं तो उत्साहित भी था। शायद लेग्रांड के अजीब व्यवहार के बीच में, कुछ ऐसा था–पूर्वचिंतन या मनन जैसा कोई हाव-भाव था, जिसने मुझे प्रभावित किया था। मैं अपनी इच्छा से खुदाई कर रहा था। और रह-रहकर मैंने खुद को सचमुच उम्मीद जैसी भावना से, काल्पनिक खजाने की तलाश करते पाया, जिसके विचार ने मेरे बेचारे साथी को विक्षिप्त कर दिया था। उस समय, जब ऐसी ख्वाहिशों से भरे विचारों ने मेरे दिमाग को बिलकुल पूरी तरह अपनी गिरफ्त में ले लिया और जब हम शायद डेढ़ घंटे काम कर चुके थे, तब एक बार फिर हमें कुत्ते के उग्र चीखने-चिल्लाने से बाधा पड़ी। पहली बार, उसकी बेचैनी स्पष्ट रूप से मस्ती या मर्जी के परिणामस्वरूप थी, पर अब उसने एक कटु और गंभीर सुर

ले लिया था। जब जुपिटर ने उसे फिर से बाँधने की कोशिश की, तो उसने प्रचंड विरोध किया, और, गड्ढे में कूदते हुए, पंजों से गड्ढे को उन्मत्ततापूर्वक खोदने लगा। कुछ ही पलों में उसने इंसानी हड्डियों के ढेर को निकाला, जो पूरे दो हड्डियों के ढाँचे बनाते थे, और जिनके साथ कई धातु के बटन और सड़े ऊन की परत दिखती थी। फावड़े के एक या दो प्रहारों से एक धारदार बड़ी स्पैनिश चाकू निकल आई, और, जब हमने आगे खुदाई की, तो हमें सोने और चांदी के तीन-चार सिक्के बिखरे नजर आये।

इनको देखकर, जुपिटर अपनी ख़ुशी मुश्किल से ही रोक पा रहा था, पर उसके मालिक की मुखाकृति पर घोर निराशा छाई थी। फिर भी, उसने हमसे अपना परिश्रम जारी रखने को कहा, और शायद ही यह शब्द कहे गए थे, जब मेरे जूते का अगला सिरा लोहे के बड़े छल्ले (जो ढीली मिट्टी में आधा दफ़न था) में फंस गया जिससे मैं लड़खड़ाया और आगे गिर पड़ा।

अब हम पूरे उत्साह से अपना काम कर रहे थे, और कभी भी मेरी जिंदगी के दस मिनट इससे ज्यादा कौतूहल से नहीं बीते थे। इस अंतराल में, हमने लकड़ी के एक आयताकार संदूक को (उसकी नायाब रखवाई और बेमिसाल मजबूत अवस्था में) काफी हद तक बाहर निकाल लिया था, जिसे साफ़ तौर पर

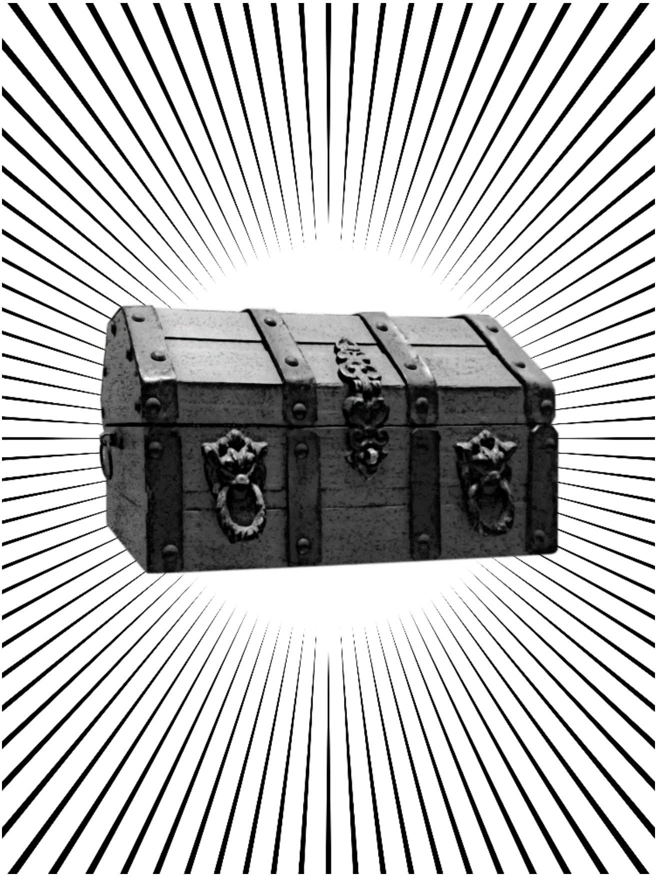
किसी *मिनरलाइजिंग*[56] प्रक्रिया (जो शायद *बाइ-क्लोराइड ऑफ़ मरकरी*[57] से की गयी थी) से गुजारा गया था। यह बक्सा साढ़े-तीन फीट लम्बा, तीन फीट चौड़ा, और ढाई फीट गहरा था। इस सन्दूक को सख्त कीलक-लगी, लोहे की पट्टियों से मजबूती से बंद किया गया था, जिससे उसपर एक तरह का खुली-जाली जैसा निर्माण बनता था। ऊपर के करीब, सन्दूक के हर तरफ, लोहे के तीन छल्ले थे—कुल मिलाकर छः—जिससे छः आदमी उसे मजबूती से पकड़ सकते थे। हमारी सारी संयुक्त कोशिशों के बावजूद हम बक्से को सतह से केवल बहुत जरा-सा ही हिला पाए। हमें तुरंत अनुभव हो गया कि इतने ज्यादा भार को हिलाना नामुमकिन था। सौभाग्यवश, ढक्कन को मात्र दो सरकाने वाली सिटकिनियों से बंद किया गया था। इन्हें[58] हमने बड़ी उत्सुकता से लड़खड़ाते हुए और हाँफते हुए, पीछे सरकाया। क्षणभर में, हमारे सामने बेशकीमती खजाना था। जैसे ही लालटेनों की रौशनी गड्ढे के भीतर पड़ी, तितर-बितर सोने और आभूषणों के ढेर से एक आभा और एक रौशनी ऊपर की ओर चमकी, जिसने हमारी आँखों को पूरी तरह से चौंधिया दिया।

---

[56] Mineralizing-जैविक चीजों को खनिज तत्वों से भरने की प्रक्रिया।

[57] Bi-chloride of Mercury (या HgCl2)-19वीं शताब्दी में लन्दन और इंग्लैंड में इसका इस्तेमाल लकड़ियों पर उसे दीमक, कीड़े और सड़न से बचाने के लिए किया जाता था।

[58] सिटकिनियों को।



मैं जिन भावनाओं से खजाने को एकटक देख रहा था उसका वर्णन करने का अभिनय नहीं करूंगा। अचंभा, बेशक, प्रबल था। लेग्रांड उत्साह के बावजूद थका लगता था, और बहुत कम शब्द बोल रहा था। कुछ मिनटों तक, जुपिटर की मुखाकृति इतनी पीली पड़ गयी थी, जितना ऐसी अवस्था में किसी भी नीग्रो के लिए होना संभव था[59]। वह स्तब्ध लगता था–जैसे उसपर गाज गिरी हो। जल्दी ही, वह गड्ढे में अपने घुटनों के बल गिरा और अपने नंगी बाँहों को उसने कुहनी तक सोने में डाल दिया, और उन्हें वहीं रहने दिया, जैसे नहाने का लुफ्त उठा रहा हो। काफी देर बाद, गहरी सांस लेते हुए वह ऐसे चिल्लाया, जैसे खुद से कह रहा हो,

“तो यह सब उस सोने के कीड़े (की वजह) से मिला है! उस खूबसूरत सोने के कीड़े से! जंगलियों की तरह उस बेचारे नन्हे-से सोने के कीड़े को, न जाने मैंने कौन-कौन-सी गाली दी! क्या तुम्हें खुद पर शरम आ रही है, नीग्रो?–इसका मुझे उत्तर दो!”

आखिरकार, यह जरूरी हो गया कि मैं खजाने को हटाने में शीघ्रता करने के लिए मालिक[60] और उसके सेवक[61] को होश में लाऊँ। देर हो रही थी, और इसने हमें यह कोशिश करने के

---

[59] कथावाचक कह रहा है कि नीग्रो जुपिटर का रंग अपने श्याम वर्ण के बावजूद भी पीला पड़ गया लगता था।

[60] लेग्रांड।

[61] जुपिटर

लिए मजबूर कर दिया कि दिन का उजाला होने से पहले हम हर चीज को घर पहुँचा दें। यह कहना मुश्किल था कि क्या किया जाना चाहिए, और काफी समय विचार-विमर्श में खर्च हो गया—सारे विचार उलझाने वाले थे। अंततः हमने बक्से की दो तिहाई चीजों को निकालकर उसे हल्का किया, जिसके बाद हम थोड़ी परेशानी के साथ, उसे गड्ढे से ऊपर उठाने में समर्थ हुए। निकाली गयी *चीजें*[62] कंटीली झाड़ियों में छिपा दी गयीं, और कुत्ता जुपिटर के सख्त आदेश पर (कि हमारे लौटने तक, वह किसी भी स्थिति में अपनी जगह से न हिले और न ही अपना मुँह खोले) *उनकी*[63] रखवाली के लिए चला गया। इसके बाद हम उस सन्दूक के साथ तेजी से घर की तरफ रवाना हुए। और काफी मशक्कत के बाद हम, सुबह एक बजे, सही-सलामत झोपड़ी में पहुँचे। हम इतना थके हुए थे, कि तुरंत और ज्यादा मेहनत करना मानवीय स्वभाव के विपरीत था। हमने दो बजे तक आराम किया, और रात का भोजन किया। इसके तुरंत बाद तीन मजबूत थैले (जो सौभाग्यवश परिसर में रखे थे) लेकर पहाड़ियों की ओर निकल पड़े। चार बजे से थोड़ा पहले हम गड्ढे तक पहुँचे। बचे हुए *माल*[64] को हमने, जितनी बराबरी से संभव था, आपस में बाँटा और गड्ढे को वैसे ही छोड़कर हम दोबारा झोपड़ी की ओर चल पड़े। वहाँ हमने दूसरी

---

[62] सोने के सिक्के और जेवर।

[63] सोने के सिक्के और जेवर की।

[64] सोने के सिक्के और जेवर।

बार अपने *सुनहरे बोझ*[65] को रख दिया, जिस समय पूरब में सुबह की शुरुआती मद्धिम किरणें, पेड़ों के शीर्ष से होकर चमक रही थी।

अब हम लोग पूरी तरह थककर चूर हो चुके थे। पर मौके पर होने वाली अत्यधिक ख़ुशी ने हमें आराम नहीं करने दिया। फिर कुछ तीन या चार घंटे की बेचैन नींद के बाद, हम (जैसे पहले से ही तय रहा हो) अपने खजाने की जांच पड़ताल करने के लिए उठे।

सन्दूक किनारे तक भरा था, और हमने सन्दूक में रखी गयी चीजों का मुआयना करने में पूरा दिन और अगली रात का बड़ा हिस्सा बिता दिया। कुछ भी क्रम या व्यवस्था में नहीं था। हर चीज अव्यवस्थित ढंग से ढेर में पड़ी थी। सबको वर्गीकृत करने के बाद, हमने पाया कि हमारे पास हमारे पूर्वानुमान से भी बड़ी संपत्ति थी। युग की सारणी द्वारा, (जितनी सटीकता से हो सका) हमारी मुद्रा की कीमत का अंदाजा लगाने पर—वहाँ *चार सौ पचास हजार डॉलर*[66] से भी अधिक सिक्के थे। वहाँ रत्तीभर भी चाँदी नहीं था। सब प्राचीन काल के सोने का था और बहुत विविध था- फ्रेंच, स्पैनिश और जर्मन मुद्राएँ, कुछ अंग्रेजी गिन्नियाँ, और कुछ अन्य देशों की मुद्राएँ और कुछ तो ऐसी मुद्राएँ भी थी जिन्हें हमने पहले कभी

[65] सोने के सिक्के और जेवर।

[66] 450, 000 डॉलर|



भी नहीं देखा था। वहाँ कई बहुत बड़े और भारी सिक्के थे, जो इतने घिसे हुए थे, कि हम उनकी लिखावट बिलकुल नहीं समझ पाए। वहाँ कोई अमेरिकी मुद्रा नहीं थी। आभूषणों के मूल्य का अनुमान लगाना हमें और कठिन लगा। वहाँ कुलमिलाकर एक सौ दस *हीरे* थे–कुछ बहुत बड़े और शानदार थे–पर कोई भी छोटा नहीं था; अट्ठारह *लाल माणिक* थे जो असाधारण रूप से चमकीले थे;–तीन सौ दस बहुत ही खूबसूरत *पन्ने* थे;–और इक्कीस *नीलम* के साथ एक *ओपल*[67] भी था। इन पत्थरों को उन ढाँचों[68] में से निकाल लिया गया था जहाँ उन्हें जड़ा गया था और संदूक में इधर-उधर फेंक दिया गया था। और ढाँचे (जिन्हें हमने बाकी के सोने में से उठाया) हथौड़े से इसलिए पीटे गए लगते थे, जिससे उनको पहचाना न जा सके। इन सब के अलावा, वहाँ काफी बड़ी मात्रा में ठोस सोने के आभूषण थे–लगभग दो सौ भारी अंगूठियाँ और कान के झुमके;–लगभग तीस बेशकीमती जंजीरें, अगर मुझे याद है;–तिरासी बहुत बड़े और भारी सलीब;–शुद्ध सोने के अतिमूल्यवान धूपदान;–अंगूर की पत्तियों और *बैच्चानेलियन*[69] आकृतियों की खूबसूरत नक्काशी से विभूषित शानदार *पंचपेय-कलश*[70]; सुन्दर

---

[67] Opal-दूधिया पत्थर।

[68] आभूषणों के ढाँचे।

[69] Bacchanalian-रोम के शराब के देवता।

[70] Punch-bowl-कलश जिसमें शराब, व्हिस्की, चाय, फलों का रस, पानी इत्यादि को मिलाया अथवा दिया जाता है।

नक्काशीदार मूठ वाली दो तलवारें, और कई अन्य छोटे सामान थे, जो मुझे याद नहीं आ रहे है। भार में तौले जाने पर इनका वज़न तीन सौ पाउण्ड[71] से ज्यादा था; और इस अंदाजे में मैंने एक सौ सत्तानबे उम्दा सोने की घड़ियों को शामिल नहीं किया है; जिनमें तीन ऐसी थी, कि उनमें हर-एक का मूल्य पांच सौ डॉलर से अधिक था। उनमें कई बहुत पुरानी थी और समय बताने वाले यंत्र के रूप में मूल्यहीन थी; क्योंकि उनके पुर्जों का लगभग क्षरण हो गया था—लेकिन सभी पर बहुत-सारे रत्न जड़े थे और वे बेशकीमती ढाँचों में थीं। उस रात, हम लोगों ने संदूक में रखी गयी सभी वस्तुओं का अंदाजन मूल्य डेढ़ मिलियन डॉलर[72] लगाया। पर, बाद में हल्के गहनों और रत्नों में से कुछ को अपने निजी उपयोग के लिए रखकर, बेचने पर हमने पाया कि हमने इस खजाने की कीमत को बहुत कम आँका था।

काफी देर बाद, जब हम लोगों ने अपनी जांच-पड़ताल पूरी कर ली, और मौके की तेज उत्तेजना, कुछ हद तक कम हो गयी, लेग्रांड (जिसने देखा कि मैं इस अत्यधिक असाधारण गुत्थी का हल जानने के लिए अधीरता से मरा जा रहा था) ने इससे जुड़ी सभी परिस्थितियों के विषय में विस्तार से बताना शुरू किया।

---

[71] 1 Pound= 0.3732417216 किलोग्राम।

[72] 1,500,000 डॉलर।

“तुम्हें याद है,” वह बोला, “उस रात जब मैंने तुम्हें अपने द्वारा बनाये गए भृंग के रेखाचित्र को तुम्हें दिया था। याद करो, मैं तुमसे काफी चिढ़ गया था जब तुमने जोर देकर कहा कि मेरा चित्र *मौत के सिर* से मिलता था। जब तुमने पहली बार यह दावा किया तो मैंने सोचा कि तुम मजाक कर रहे हो; पर बाद में मुझे कीड़े के पीठ पर बने हुए असामान्य धब्बे याद आये, और मैंने खुद स्वीकार लिया कि तुम्हारी टिप्पणी में सचमुच थोड़ा नन्हा-सा आधार था। फिर भी, अपनी चित्रकारी पर उपहास से मैं चिढ़ा हुआ था—क्योंकि मैं एक कुशल चित्रकार माना जाता हूँ—और, इसलिए जब तुमने मुझे *पार्चमेंट*[73] का टुकड़ा थमाया, मैं इसे मरोड़कर गुस्से से आग में फेंकने वाला था।”

“तुम्हारे कहने का मतलब है, वह *कागज* का टुकड़ा,” मैंने कहा।

“नहीं! यह काफी हद तक कागज जैसा लगता था, और पहले, मैंने भी इसे कागज ही समझा, पर, जब मैं इसपर चित्र बनाने लगा, मैंने तुरंत जान लिया कि यह बहुत पतले पार्चमेंट का टुकड़ा था। तुम्हें याद होगा, यह बहुत ही गंदा था। खैर, जब मैं उसे मरोड़ने का काम कर रहा था, ठीक तब मेरी नजर उस रेखाचित्र पर पड़ी जिसे तुम देख रहे थे। और तुम मेरे आश्चर्य की हद की कल्पना कर सकते हो, जब मैंने सचमुच *मौत के सिर* को ठीक वहीं देखा, जहां (मुझे ऐसा लगा) मैंने उस कीड़े

[73] Parchment-चमड़े से बनाया गया कागज।

का चित्र बनाया था। क्षणभर के लिए, मैं सही ढंग से सोचने के लिए बहुत ज्यादा हतप्रभ था। मुझे मालूम था कि मेरे द्वारा बनाई गयी रूपरेखा सूक्ष्म बिन्दुओं पर इससे काफी अलग थी-हालाँकि सामान्य रूपरेखा में कुछ समानता थी। जल्दी ही मैंने एक मोमबत्ती को लिया, और कमरे के दूसरे सिरे में जाकर, बैठकर उस पार्चमेंट को और ज्यादा ध्यानपूर्वक जांचने लगा। इसे पलटने पर, मैंने अपने रेखाचित्र को ठीक वैसे उल्टा देखा, जैसा मैंने उसे बनाया था। अब मेरा पहला एहसास, रेखाचित्र से उल्लेखनीय समानता पर—तथ्य से जुड़े ऐसे एक संयोग पर, केवल आश्चर्य करना था। बिना मेरी जानकारी के मेरे भृंग की आकृति के ठीक नीचे, पार्चमेंट की दूसरी तरफ एक खोपड़ी थी और यह खोपड़ी न सिर्फ रूपरेखा में, बल्कि आकार में भी मेरे द्वारा बनाये गये रेखाचित्र से इतनी करीबी समानता रखती थी। मैं कह रहा हूँ कि इस अकेले संयोग ने एक समय मुझे पूरी तरह से विस्मित कर दिया था। ऐसे संयोगों का यह आम प्रभाव होता है। दिमाग एक सम्बन्ध को—कारणों और परिणामों के अनुक्रम को, स्थापित करने के लिए जूझता है—और, ऐसा न कर पाने की अवस्था में, एक किस्म की अल्पकालिक लाचारी को झेलता है। पर, जब मैं इस संवेदन-शून्यता से उबरा, तो मुझमें धीरे-धीरे एक दृढ़ निश्चय पनपने लगा, जिसने मुझे उस संयोग से भी कहीं ज्यादा चौंका दिया। मुझे पक्का, साफ़-साफ़, याद आने लगा कि पार्चमेंट पर कोई भी चित्र उस समय नहीं बना था

जब मैंने उस भृंग का रेखाचित्र बनाया था। मैं इस बारे में पूरी तरह आश्वस्त हो गया; क्योंकि मुझे याद आया कि साफ़ जगह की तलाश में मैंने पहले इसे एक तरफ और फिर दूसरी तरफ पलटा था। अगर वहाँ पर खोपड़ी होती, तो बेशक मुझसे उसे देखने में चूक नहीं होती। यहाँ वाकई, ऐसा रहस्य था जिसे समझ पाना मुझे नामुमकिन लगा। पर, उस शुरुआती क्षण में भी, मेरी प्रज्ञा के सबसे दूरवर्ती और गुप्त तहखानों में, *उस सच की समझ* एक जुगनू जैसी धीमी-धीमी झिलमिलाती लगी, जिसका पिछली रात के साहसिक काम ने इतना शानदार नमूना पेश किया[74]। मैं तुरंत उठा, और आगे के सारे चिंतन को तब तक के लिए टाल दिया जब तक कि मैं अकेला न हो जाऊँ।

“जब तुम जा चुके थे, और जब जुपिटर गहरी नींद में था, मैंने मामले की और ज्यादा विधिवत् जांच करने में खुद को व्यस्त कर लिया। सबसे पहले मैंने इसपर विचार किया कि यह पार्चमेंट मेरे कब्जे में किस तरह आया। वह जगह, जहाँ हमने उस भृंग को पाया था, द्वीप के लगभग एक मील पूर्व की ओर मुख्य-भूभाग के किनारे पर थी, और उच्च जल बिंदु से केवल कुछ ही दूर की ऊँचाई पर थी। जब मैं इसको पकड़ रहा

---

[74] लेग्रांड कह रहा है, कि जब उसने पार्चमेंट को उलट-पलटकर देखा तो उसे समझ में आ गया था कि वह कोई साधारण कागज़ नहीं है। उसी पार्चमेंट के कारण वह पिछली रात इतना विशाल खजाना खोजने में सक्षम हो सका।

था, इसने मुझे कसकर काटा, जिस वजह से मुझसे यह गिर पड़ा। कीड़ा (जो उड़कर जुपिटर की तरफ चला गया था) पकड़ने से पहले, जुपिटर ने अपनी आदतन सावधानी से अपने इर्दगिर्द एक पत्ते, या उसी जैसी किसी चीज की तलाश की, जिससे उसे पकड़ा जा सके। यही वह क्षण था जब उसकी (और मेरी भी) आँखें एक पार्चमेंट के टुकड़े पर पड़ी, जिसे मैंने उस समय कागज समझा था। वह रेत में आधा दबा हुआ था, और एक उसका किनारा निकला हुआ था। जहां हमें यह पार्चमेंट मिला, उस जगह के नजदीक मैंने जहाज की लम्बी नौका के *हल*[75] जैसे दिखने वाले अवशेष पाए थे। टूटी नौका को देखने से ऐसा लगता था कि जैसे वह काफी अरसे से वहाँ पड़ी थी; क्योंकि नौका की लकड़ियों की पहचान मुश्किल से हो पा रही थी।

“खैर, जुपिटर ने पार्चमेंट को उठाया, उसमें कीड़े को लपेटा, और उसे मुझे दे दिया। उसके बाद, जल्दी ही हम घर जाने के लिए मुड़े, और रास्ते में लेफ्टिनेंट जी– से मिले। मैंने उन्हें कीड़ा दिखाया, और उन्होंने उसे अपने साथ किले में ले जाने का अनुरोध किया। मेरे अनुमति देने पर, उन्होंने उसे फौरन अपनी वेस्टकोट की जेब में (बिना उस पार्चमेंट के जिसमें कीड़ा लपेटा गया था और जिसे मैंने उनके निरीक्षण के दौरान अपने हाथों में ले रखा था) ठूँस लिया। शायद उन्हें मेरा मन बदलने का

[75] Hull-जहाज अथवा नौका का ढाँचा जिसके सहारे जहाज अथवा नौका पानी में तैरते हैं।

डर था, और उन्हें (कीड़े पर अपना) प्राधिकार तुरंत सुनिश्चित करना सबसे उचित लगा—तुम जानते हो वह प्राकृतिक इतिहास से जुड़े सभी विषयों के प्रति कितने जोशीले हैं। इसी दौरान, मैंने अनजाने में, पार्चमेंट को अपनी खुद की जेब में डाल लिया होगा।

“तुम्हें याद होगा कि जब मैं इस कीड़े का चित्र बनाने के लिए मेज पर गया, तो मुझे वहाँ कोई कागज नहीं मिला था जहाँ सामान्यतः कागज रखा जाता है। मैंने दराज में देखा और वहाँ मुझे कोई कागज नहीं मिला था। किसी पुराने पत्र को पाने की उम्मीद से, मैं अपनी जेबों को टटोल रहा था, जब मेरा हाथ पार्चमेंट पर पड़ा। मैं इस तरह तफसील से यथातथ्य जरिया बता रहा हूँ कि कैसे यह मेरे कब्जे में आया; क्योंकि परिस्थितियों ने मुझे असामान्य तरीके से प्रभावित किया था।

“बेशक तुम मुझे सिरफिरा समझोगे—लेकिन मैंने पहले ही एक तरह का *सम्बन्ध* स्थापित कर लिया था। मैंने इस विशाल श्रृंखला की दो कड़ियों को एक साथ जोड़ा। वहाँ एक नौका समुद्र-तट पर पड़ी थी, और नाव के करीब *पार्चमेंट* था—*न कि एक कागज*—जिस पर खोपड़ी चित्रित थी। तुम अवश्य ही पूछोगे “इसमें सम्बन्ध कहाँ है?” मेरा जवाब है कि खोपड़ी, या मौत का सिर, समुद्री डाकुओं का सुप्रसिद्ध प्रतीक-चिन्ह है। मौत के सिर का झंडा उनकी सभी लड़ाइयों में फहराया जाता है।

“मैंने बताया कि टुकड़ा एक पार्चमेंट था, न कि कोई कागज। पार्चमेंट बहुत टिकाऊ होता है–तकरीबन अनश्वर जैसा। पार्चमेंट में महत्वहीन सामग्री कभी-कभार ही भेजी जाती है; क्योंकि चित्र बनाने अथवा लिखने जैसे मामूली प्रयोजनों के लिए, यह कागज जितनी अच्छी तरह से उपयुक्त नहीं होता। इस गहन चिंतन से मौत की खोपड़ी को कुछ मतलब मिला–कुछ प्रासंगिकता मिली। इसके साथ, मैंने पार्चमेंट के *स्वरूप* पर गौर करने में भी गलती नहीं की। हालांकि, इसका एक कोना, किसी दुर्घटना से नष्ट हो गया था, यह देखा जा सकता था कि इसका वास्तविक रूप आयताकार था। वाकई में, यह ऐसी *पर्ची* थी, जिसे *स्मृतिपत्र* के लिए चुना जा सकता था–ऐसी चीज को दर्ज करने के लिए जिसको लम्बे समय तक याद रखा जाए और सावधानी से सुरक्षित रखा जाए।”

“लेकिन” मैं बीच में बोल पड़ा, “तुमने कहा कि पार्चमेंट पर जब तुमने उस कीड़े का चित्र बनाया तब कोई खोपड़ी *नहीं* थी। तब तुमने नौका और खोपड़ी के बीच किसी सम्बन्ध का कैसे पता लगाया–क्योंकि जैसा तुमने खुद माना, यह खोपड़ी, तुम्हारे *भृंग* के रेखाचित्र को बनाने के कुछ समय बाद बनी होगी। केवल ईश्वर ही जानता है कि यह कैसे और किसके द्वारा बनाई गयी है?”

“हाँ, इसके बाद सारे रहस्य में मोड़ आता है। हालाँकि इस बिंदु पर, रहस्य को सुलझाना तुलना में थोड़ा मुश्किल था। मेरे कदम अडिग थे, और मैं एक नतीजे के सिवाय कुछ भी बर्दाश्त

नहीं कर सकता था। इसलिए उदाहरण स्वरूप मैंने यह तर्क लगाया: जब मैंने उस भृंग का रेखाचित्र बनाया था उस समय पार्चमेंट पर कोई खोपड़ी नहीं दिख रही थी। जब मैंने चित्र पूरा कर लिया, मैंने चित्र तुमको दे दिया था। और मैं तुमको गौर से देख रहा था जब तक कि तुमने मुझे वह लौटा नहीं दिया। अतः, *तुमने* उस खोपड़ी को नहीं बनाया था, और वहाँ पर ऐसा करने के लिए कोई दूसरा व्यक्ति भी नहीं था। तो यह किसी आदमी द्वारा नहीं किया गया था। लेकिन फिर भी यह बन गया था।

“अपने चिंतन की इस अवस्था में, मैंने याद करने की कोशिश की, और मुझे पूरी सुस्पष्टता से, संदिग्ध अवधि में घटित होने वाली हर घटना, याद *भी* आ गयी। मौसम ठंडा था (ओह जो एक यदा-कदा होने वाला और सौभाग्यशाली इत्तफाक था!), और अंगीठी पर आग जल रही थी। परिश्रम से मैं गर्म हो गया था और टेबल के समीप बैठा था। फिर भी, तुमने एक कुर्सी को चिमनी के समीप खींच लिया था। जैसे ही मैंने पार्चमेंट को तुम्हारे हाथों में दिया, और जब तुम उसको जाँचने का काम कर रहे थे *भेड़िये-जैसा* न्यूफाउंडलैंड आया और कूदकर तुम्हारे कंधों पर चढ़ गया। अपने बायें हाथ से तुम उसे सहला रहे थे और उसे दूर रख रहे थे, जबकि तुम्हारे दाहिने हाथ से असावधानीवश पार्चमेंट तुम्हारे घुटनों के बीच, आग के करीब गिर गया। एक क्षण के लिए मुझे लगा कि (आग की) लपट ने उसे पकड़ लिया, और मैं तुम्हें सावधान

करने ही वाला था। लेकिन, इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, तुमने उसे उठा लिया और उसको जांचने में व्यस्त हो गए। जब मैंने इन सारे ब्यौरों पर विचार किया, तो मुझे क्षणभर भी संदेह नहीं रहा कि पार्चमेंट पर पड़ने वाली *गर्मी* ही वह माध्यम थी, जिससे मुझे उसपर खोपड़ी बनी दिखी। तुम अच्छी तरह जानते हो कि ऐसे रासायनिक पदार्थ होते हैं, (और न जाने कब से होते रहे हैं) जिनसे कागज या *वेलम*[76] पर इस तरह लिखना संभव है कि उनपर अक्षर केवल तभी दिखेंगे जब उन्हें आग के प्रभाव के सामने किया जाए। कभी-कभी, अपने वज़न के चार गुना पानी द्वारा पतला किये गए, *एक्वा रेजिया* में डाइजेस्टेड जाफर[77] का इस्तेमाल किया जाता है; परिणाम हरा रंग होता है। नाइटर की स्पिरिट[78] में घोले गए, *कोबाल्ट के धातुक*[79] से लाल रंग मिलता है। ये रंग (ज्यादा अथवा कम अन्तराल पर) उस लिखे गए मटेरियल के ठण्डा होने के बाद

---

[76] Vellum- भेड़, बकरी अथवा बछड़े के चर्म से बने मुलायम चर्मपत्र।

[77] Zaffre digested in aqua regia- कोबाल्ट का अशुद्ध ऑक्साइड को एक्वा रेजिया की नमी और गर्मी द्वारा मुलायम किया जाना।

[78] Spirit of nitre(या aqua fortis)- HNO3|

[79] Regulas of cobalt-एक भंगुर अर्द्ध धातु है जो संयत लाल आग में पिघल जाती है कोबाल्ट का धातुई रूप जो उससे ऑक्सीजन को हटाने से मिलता है।

गायब हो जाते हैं, पर गर्मी के उपयोग से फिर से प्रकट हो जाते हैं।

"अब मैंने *मौत की खोपड़ी* को सावधानी से जाँचा। इसके बाहरी किनारे–*वेलम* के निकटतम सिरे पर बने चित्र के किनारे–बाकी हिस्सों की तुलना में कहीं ज्यादा *भिन्न* थे। यह स्पष्ट था कि गर्मी का असर अपूर्ण अथवा असमान था। मैंने तुरंत ही आग जलाई और पार्चमेंट के हर हिस्से को प्रज्वलित आग के करीब ले गया। सबसे पहले, इकलौता असर खोपड़ी की धुंधली रेखाओं का गाढ़ा होना था; लेकिन इस प्रयोग में डटे रहने पर, जहाँ *मौत का सिर* बना था, *उस* स्थान के सामने तिरछी ओर पर्ची के किनारे पर एक आकृति दिखी, जिसे पहले मैंने एक बकरी समझा। पर, गौर से देखने पर मैं संतुष्ट हो गया कि यह किसी *बच्चे*[80] की थी।

"हा! हा!" मैंने कहा, "मैं मानता हूँ कि मुझे तुम्हारा मजाक उड़ाने का कोई अधिकार नहीं है–डेढ़ मिलियन का धन ठिठोली करने के लिए बहुत गंभीर मुद्दा है–लेकिन तुम अपनी इस श्रृंखला की तीसरी कड़ी को स्थापित नहीं कर सकते हो–तुम उन समुद्री डाकुओं और बकरी के बीच कोई ख़ास सम्बन्ध नहीं खोज पाओगे–तुम जानते हो, बकरियों का डाकुओं से कोई

[80] Kid-बच्चा।

लेना-देना नहीं होता; उनका कृषि में रुचि (रखनेवालों) से सम्बन्ध होता है।"

"लेकिन अभी-अभी मैंने बताया कि वह आकृति बकरी की *नहीं* थी।"

"तो, फिर एक *बच्चा*—लगभग वही बात है।"

"लगभग, लेकिन पूरी तरह से नहीं," लेग्रांड ने कहा "शायद तुमने *कैप्टन किड*[81] के बारे में सुना हो। मैंने फौरन जीव की आकृति को एक तरह का मजाकिया या सांकेतिक हस्ताक्षर माना[82]। मैं इसे हस्ताक्षर कह रहा हूँ; क्योंकि *वेलम* पर उसकी जगह से यही विचार सूझता था। इसी तरह, सामने तिरछी ओर के किनारे पर बने *मौत के सिर* से, मुहर या सील जैसा एहसास होता था। लेकिन मैं बाकी सब चीजों (मेरे कल्पित दस्तावेज के मुख्य हिस्से और मेरे काम की विषयवस्तु) के अभाव से बुरी तरह आहत था।"

"मैं समझता हूँ कि तुम मुहर और हस्ताक्षर के बीच किसी संदेश को पाने की अपेक्षा कर रहे थे।"

"वैसा ही कुछ समझो। सच्चाई यह है, कि घटित होने वाले किसी बहुत बड़े सौभाग्य के पूर्वाभास से मैं बेकाबू ढंग से

---

[81] Captain Kidd-एक स्कॉटिश जहाजी जिसको पुराने समय में सबसे कुख्यात समुद्री लुटेरों में से एक माना जाता था।

[82] 'Kidd' और 'kid' दोनों ही शब्दों का एक ही उच्चारण होता है।

प्रभावित महसूस कर रहा था। मैं शायद ही इसकी वजह बता सकूँ। आखिरकार, शायद यह वास्तविक विश्वास से ज्यादा ख्वाहिश थी–लेकिन क्या तुम्हें मालूम है कि कीड़े के ठोस सोने के होने के बारे में जुपिटर के मूर्खतापूर्ण शब्दों ने, मेरी कल्पना पर अनोखा असर किया था? और इसके बाद इत्तफाक और संयोगों की श्रृंखलायें–ये सभी बहुत असाधारण थे। क्या तुम देख सकते हो कि कैसा यह एक इत्तफाक था जो साल भर में इसी *अकेले* दिन में ऐसी घटनाओं को होना था जिसमें वह हुईं? या हो सकता है अगर, आग जलाने के लिए बहुत ठण्ड पड़ रही होती, और आग न जल रही होती, या कुत्ते द्वारा विघ्न ठीक उस समय न पड़ा होता जब वह आया, तो मैं कभी भी *मौत के सिर* के बारे में नहीं जान पाता, और इस तरह कभी खजाने को प्राप्त नहीं कर पाता?"

"चलो अब आगे बताओ–मैं बहुत अधीर हो रहा हूँ।"

"खैर, तुमने अवश्य ही, कई प्रचलित कहानियों–तैरती हुई हज़ार धुंधली अफवाहों को सुना होगा, जो किड और उसके सहयोगियों द्वारा अटलांटिक तट पर कहीं दफनाये गए धन के बारे में है। इन अफवाहों का सचमुच कोई आधार रहा होगा। और ये अफवाहें इतने लम्बे समय से और लगातार अस्तित्व में रही है, मुझे लगा कि यह केवल इस परिस्थिति का नतीजा हो सकती है, जब गड़ा हुआ खजाना अभी भी *दफ़न हो*। अगर किड ने अपने लूट के माल को थोड़े समय के लिए छिपाया था, और उसे बाद में पुनः प्राप्त कर लिया था, तो ये अफवाहें



अपने मौजूदा अपरिवर्तित रूप में हम तक मुश्किल से ही पहुँचती। तुम देख सकते हो कि सारी कहानियाँ धन की खोज करने वालों की हैं, न की धन को पाने वालों की। अगर उस समुद्री लुटेरे ने अपने धन को प्राप्त कर लिया होता, तो मसला खत्म हो गया होता। मुझे ऐसा लगा कि किसी हादसे से–मिसाल के तौर पर, उसकी जगह बताने वाले स्मृतिपत्र के गुम हो जाने से–उसने उसे वापस पाने का तरीका गँवा दिया था। और इस हादसे का उसके अनुयायियों को (जिन्होंने अन्यथा खजाने के छिपाए जाने के बारे में बिलकुल भी नहीं सुना होता) पता लग गया था। और उसे दोबारा पाने की दिशाविहीन कोशिश व्यर्थ जाने से, पहले तो वर्तमान में प्रचलित अफवाहों को जन्म मिला, और फिर हर जगह व्यापकता मिली। क्या तुमने कभी तट के पास धन के लिए खुदाई करने वालों के द्वारा किसी ख़ास खजाने के पाए जाने के बारे में सुना है?”

“कभी नहीं!”

“लेकिन सब जानते है, किड का *संचय*[83] बहुत विशाल था। इसलिए, मैंने इसे मान लिया, कि वह अभी भी जमीन में ही था; और तुम शायद ही इस बात से चकित होगे अगर मैं तुमसे कहूँ, कि मैंने (लगभग भरोसे जितनी) उम्मीद को महसूस किया, कि वह पार्चमेंट जो इतनी अजीब तरह से मिला था,

[83] खजाने का संचय।

किसी गाड़े गए खजाने की जगह बताने वाली गुमशुदा तहरीर से सम्बन्ध रखता था।"

"लेकिन तुम आगे कैसे बढे?"

"मैंने गर्मी बढ़ाने के बाद, वेलम को एक बार फिर आग के पास किया। लेकिन कुछ भी प्रकट नहीं हुआ। तब मैंने सोचा कि हो सकता है, धूल की परत के चढ़े होने का, इस विफलता से कोई सम्बन्ध हो। इसलिए मैंने सावधानी से गुनगुने पानी को पार्चमेंट पर डालकर उसे धोया और ऐसा करने के बाद, मैंने उसपर बनी खोपड़ी नीचे की ओर करके उसे एक *टिन पैन*[84] पर रखा, और पैन को जलते कोयले की भट्टी के ऊपर रख दिया। कुछ मिनटों में, पैन के पूरी तरह गरम होने पर, मैंने पर्ची को हटाया, और, मैं अकथनीय रूप से खुश हो गया, जब मैंने उसपर कई जगह धब्बे बने पाए, जो देखने में पंक्तिबद्ध संख्याएँ लगती थीं। फिर से मैंने उसे पैन पर रखा, और एक और मिनट उसे वहाँ रहने दिया। उसे उठाने पर, सबकुछ वैसा था जैसा तुम अब इसे देख रहे हो।"

यहाँ लेग्रांड ने मुझे निरीक्षण के लिए पार्चमेंट दिया। पार्चमेंट पर *मौत के सिर* और बकरी के बीच निम्नलिखित अक्षर अस्पष्ट तरीके से बने थे:

---

[84] Tin pan-टिन का बर्तन।

“53‡‡†305))6*;4826)4‡.)4‡);806*;48†8¶60))85;1‡(;:‡*8†83
(88)5*†;46(;88*96*?;8)*‡(;485);5*†2:*‡(;4956*2(5*-
4)8¶8*;4069285);)6†8)4‡‡;1(‡9;48081;8:8‡1;48†85;4)485†
528806*81(‡9;48;(88;4(‡?34;48)4‡;161;:188;‡?; ”

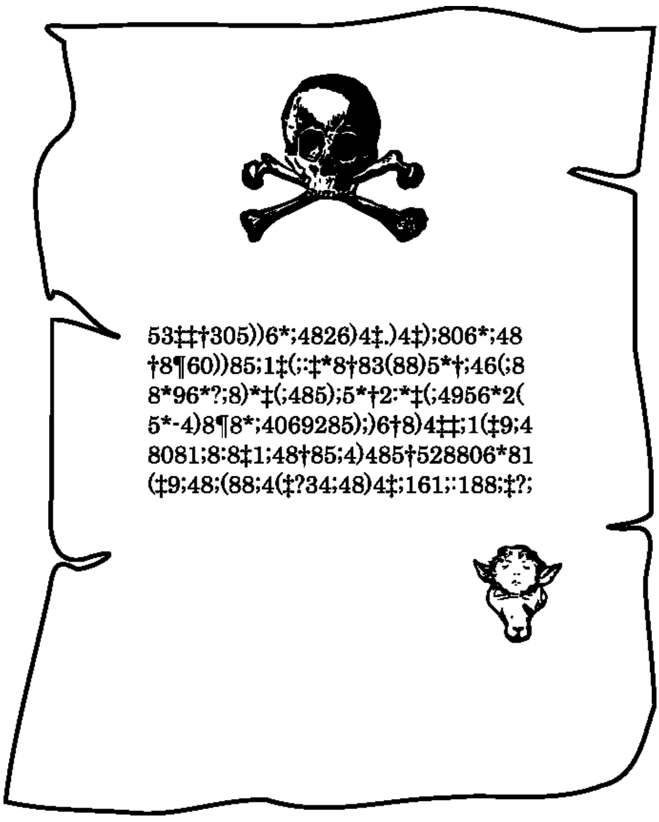
“लेकिन,” मैंने उसे पर्ची लौटाते हुए कहा “मैं अभी भी पहले की ही तरह अँधेरे में हूँ। अगर *गोलकोंडा*[85] की बेशकीमती मणियाँ, मेरे द्वारा इस पहेली का हल ढूंढें जाने की प्रतीक्षा कर रही होतीं, तो मुझे पूरा यकीन है कि मैं उन्हें कभी हासिल न कर पाता।”

“और फिर भी,” लेग्रांड ने कहा “इसका हल किसी भी तरह उतना कठिन नहीं है जितना तुम (अक्षरों को जल्दबाजी में देखने की वजह से) उसके होने की कल्पना कर रहे हो। ये अक्षर, जैसा कोई भी आसानी से अंदाजा लगा सकता है, एक *साइफर*[86] बनाते हैं—कहने का मतलब यह है कि इनमें एक अर्थ छिपा है। पर तब, जितना किड के बारे में ज्ञात है, उससे मैं यह नहीं मान सकता था कि वह कोई अत्यंत जटिल गोपनीय लिपि बनाने में सक्षम था। मैंने तुरंत अपना मन बना लिया, कि यह लिपि सरल प्रकार की थी—पर, जो ऐसी थी कि

---

[85] Golconda-कथावाचक *खजाने* के सन्दर्भ में अलंकार का प्रयोग कर रहा है। गोलकोंडा दक्षिण भारत में एक क्षेत्र है जहाँ से कोहिनूर जैसे विश्व के सबसे उम्दा कीमती पत्थर पाए गए थे।

[86] Cypher-सांकेतिक भाषा जिनमें सन्देश को छिपाने के लिए अक्षरों को बदल दिया जाता है।


53‡‡†305))6*;4826)4‡.)4‡);806*;48
†8¶60))85;1‡(;:‡*8†83(88)5*†;46(;8
8*96*?;8)*‡(;485);5*†2:*‡(;4956*2(
5*-4)8¶8*;4069285);)6†8)4‡‡;1(‡9;4
8081;8:8‡1;48†85;4)485†528806*81
(‡9;48;(88;4(‡?34;48)4‡;161;:188;‡?;

किसी अपरिपक्व समझ वाले नाविक को बिना कुंजी के हल करनी पूरी तरह असंभव लगती।"

"और तुमने इसे सचमुच हल कर लिया?"

"आसानी से। मैं इससे दस हजार गुना ज्यादा जटिल अन्य लिपियों को सुलझा चुका हूँ। परिस्थिति और मस्तिष्क के एक ख़ास रुझान ने, मुझमें ऐसी पहेलियों के प्रति रुचि पैदा कर दी है। और यह बिलकुल संदेहास्पद है कि क्या इंसानी प्रतिभा इस तरह की पहेली बना सकती है, जिसे इंसानी विवेक के सही इस्तेमाल द्वारा नहीं सुलझाया जा सकता[87]। असल में, एक बार सटे हुए और सुस्पष्ट अक्षरों की पुष्टि करने के बाद, मुझे उनका अर्थ निकालने की मामूली समस्या के बारे में, शायद ही सोचना पड़ा।"

"वर्तमान मामले में (दरअसल गोपनीय लिखाई के हर मामले में) पहला प्रश्न साइफर की *भाषा* से सम्बंधित होता। और क्योंकि अब तक, *हल के सिद्धांत* (खासतौर से तब जब ज्यादा आसान साइफर का मसला हो) एक विशेष शैली की गुण पर निर्भर करते हैं और भिन्नता रखते हैं। साधारणतः, कोई भी विकल्प नहीं होता। परन्तु वह जो (साइफर को) सुलझाने की कोशिश करता है, अपनी हर ज्ञात भाषा का (संभावनाओं द्वारा

[87] लेग्रांड के कहने का मतलब है कि उसे पहेलियाँ सुलझाने में रुचि है और उसका मानना है कि हर पहेली का हल इंसान की समझ-बूझ से हो सकता है।

निर्देशित) एक परीक्षण करता है, जब तक कि सही भाषा मालूम नहीं हो जाती[88]। पर अब जो साइफर हमारे सामने था, उसकी सारी परेशानियों को हस्ताक्षर ने दूर कर दिया था। “किड” शब्द के मजाकिया उपयोग को अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में नहीं समझा जा सकता है। पर, इस कारणवश मुझे *स्पैनिश* और *फ्रेंच* में अपनी कोशिश शुरू करनी चाहिए थी,[89] क्योंकि इस तरह के रहस्य को स्वाभाविक रूप से किसी स्पैनिश भूभाग के समुद्री डाकू ने लिखा होता। जो भी हो, मैंने यह मान लिया की सांकेतिक भाषा को इंग्लिश में लिखा गया होगा।”

“तुम देख रहे हो, यहाँ शब्दों के बीच में कोई अलगाव नहीं हैं। अगर इसमें अलगाव होता तो हमारा काम तुलना में काफी आसान होता। ऐसे मामले में, मुझे छोटे शब्दों को मिलाना और जाँच-पड़ताल शुरू करनी होती। और यदि एक अक्षर का कोई शब्द होता, (जैसे a या I) जो सबसे ज्यादा संभावित होते हैं, मैंने इस हल को निश्चित मान लिया होता। पर चूँकि यहाँ कोई अलगाव नहीं था, मेरा पहला कदम सर्वाधिक इस्तेमाल

---

[88] लेग्रांड कह रहा है कि जो व्यक्ति साइफर सुलझाने की कोशिश करता है, वह अपनी जानकारी की हर भाषा को आजमाता है। इससे उसे मालूम हो जाता है कि क्या किसी भाषा के प्रयोग से उस साइफर का मतलब निकलता है।

[89] स्पैनिश और फ्रेंच भाषाएँ अंग्रेजी से काफी समानता रखती हैं।

होने वाले (अक्षरों) के साथ-साथ सबसे कम होने वाले अक्षरों का पता लगाना था।

सबको गिनकर, मैंने इस तरह की सूची बनायी:

| | | |
|---|---|---|
| अक्षर 8 | यहाँ हैं | 33 |
| ; | " | 26 |
| 4 | " | 19 |
| ‡ और ) | " | 16 |
| * | " | 13 |
| 5 | " | 12 |
| 6 | " | 11 |
| † और 1 | " | 8 |
| 0 | " | 6 |
| 9 और 2 | " | 5 |
| : और 3 | " | 4 |
| ? | " | 3 |
| ¶ | " | 2 |
| - | " | 1 |

"अब, अंग्रेजी में, जो अक्षर सबसे ज्यादा होता है, वह *e* है। उसके बाद, अनुक्रम इस तरह होता है: *a o i d h n r s t u y c f g l m w b k p q x z*। ***E*** इतने असामान्य रूप से प्रचलित है कि किसी भी लम्बाई के अकेले वाक्य में ऐसा मुश्किल से

देखने को मिलता है, जिसमें वह सर्वाधिक होने वाला अक्षर नहीं होता।

“तो, यहाँ, बिलकुल शुरूआत में, हमारे पास एक मामूली अंदाजे से बेहतर आधार है। साफ तौर पर सूची का सामान्य इस्तेमाल किया जा सकता है—पर, इस विशेष साइफर में, हमें इसकी सहायता की केवल आंशिक रूप से जरूरत है। क्योंकि हमारा सर्वाधिक होने वाला अक्षर 8 है, हम इसे सहज वर्णमाला का अक्षर *e* मानकर शुरूआत करेंगे। इस अनुमान की पुष्टि के लिए, हम देखते हैं कि क्या 8 अक्सर जोड़े में दिखाई देता है—क्योंकि इंग्लिश में, *e* ऐसे शब्दों में, कई बार दोहराया जाता है—उदाहरण के रूप में ‘meet,’ ‘fleet,’ ‘speed,’ ‘seen,’ ‘been,’ ‘agree,’ इत्यादि। मौजूदा परिस्थिति में हम देख सकते हैं कि यह कम से कम पाँच बार जोड़े में है, हालाँकि *गोपनीय लिपि* संक्षिप्त है।

“तो हम 8 को *e* मानते हैं। अब भाषा के सभी शब्दों में ‘the’ सबसे आम है। तो अब देखते हैं, कि किन्हीं तीन अक्षरों को दोहराया तो नहीं गया, जिनके अंत में 8 है। अगर हम ऐसे अक्षरों का दोहराया जाना इस तरह के क्रम में देखते हैं, तो संभवतः वे सबसे ज्यादा ‘the’ शब्द को दर्शाते हैं। निरीक्षण पर हम कम से कम सात ऐसे क्रम देखते हैं, जिनके अक्षर ;48 है। इसलिए हम ऐसा मान सकते हैं कि ; दर्शाता है t, 4 दर्शाता है h, और 8 दर्शाता है e—अंतिम वाले अक्षर की अब

अच्छे से पुष्टि हो गयी। इस प्रकार एक बड़ा कदम ले लिया गया है।”

“केवल एक शब्द को मालूम कर के, हम एक बहुत ख़ास बिंदु की पुष्टि करने में सक्षम हो गए हैं। कहने का मतलब है, कई अन्य शब्दों की शुरुआत और अंत को (हम मालूम कर सकते हैं)। उदाहरण के लिए, हम अंतिम से एक पहले वाली जगह देखते हैं जहाँ ;48 होता है–जो साइफर के अंत से ज्यादा दूर नहीं है। हम जानते हैं कि ; जो तुरंत बाद आता है, शब्द की शुरुआत है, और, छः अक्षर जो इस ‘the’ के बाद आते हैं, उनमें से हम कम-से-कम पाँच को जानते हैं। हमें इन अक्षरों को लिख लेना चाहिए, इस प्रकार, अज्ञात एक अक्षर का स्थान रिक्त छोड़कर, अक्षरों से हम जान जाते हैं कि वह दर्शाते हैं–

t☐eeth

“यहाँ, हम तुरंत *‘th’* को छोड़ने में सक्षम हो जाते हैं, क्योंकि ये, पहले *t* से शुरू होने वाले किसी भी शब्द का हिस्सा नहीं बनते हैं। क्योंकि खाली जगह पर उपयुक्त अक्षर जानने के लिए सारे अक्षरों का प्रयोग करने पर, हमें एहसास होता है कि ऐसा कोई भी शब्द नहीं बन सकता, जिसका ये *th* हिस्सा हो सकता है। इसलिए हम सीमित होकर रह जाते हैं–

t☐ee

और, अगर पहले की तरह जरूरत पड़ती है तो अक्षर को आजमा कर हम एक मात्र संभावित शब्द ‘tree’ पर पहुँचते हैं। इस तरह हम एक अन्य अक्षर, r को पाते है जिसे ( से दर्शाया गया है, जिससे आसपास लगे शब्द ‘the tree’ मिलते हैं।

“इन शब्दों के आगे देखने पर, कुछ दूरी पर, हम दोबारा ; 48 के संयोग को देखते हैं, और उसका इस्तेमाल तुरंत पहले वाले अक्षरों को बदलकर करते है। इस प्रकार हमारे पास यह क्रम है:

the tree; 4(‡?34 the

या, जहाँ ज्ञात है, वहाँ सरल अक्षर से बदलने पर, इसे इस तरह पढ़ा जा सकता है:

the tree thr‡?3h the

“अब, यदि अज्ञात अक्षरों के स्थान पर, हम खाली जगहें छोड़ दें, या उनको बिन्दुओं से बदल दें, तो हम यह पढ़ते हैं:

the tree thr ● ● ● h the

जिसपर ‘through’ शब्द तुरंत स्वयं प्रकट हो जाता है। केवल इस खोज से हमें 3 नये अक्षर *o*, *u* और *g* मिलते हैं, जो ‡ ? और 3 द्वारा दर्शाये गए हैं।

“अब मालूम अक्षरों के जोड़ों को साइफर की शुरूआत से अंत तक बारीकी से देखने पर, हम इस *क्रम* को शुरुआत से ज्यादा दूर नहीं पाते हैं,

83(88, या egree

जो सीधे तौर पर, ‘degree,’ शब्द का अंत है, और यह हमें एक अन्य अक्षर *d* देता है, जिसे † से दर्शाया गया है।

“चार अक्षर ‘degree,’ शब्द से आगे जाने पर, हम निम्न संयोग को देखते हैं

;46(; 88

पहले की तरह, ज्ञात अक्षरों का अनुवाद करने पर और अज्ञात अक्षर को *बिंदु* से दर्शाने पर, हम ऐसे पढ़ सकते हैं:

th ● rtee ●

जो *क्रम* तुरंत ‘thirteen,’ शब्द को जाहिर करता है और फिर से हमें दो नये अक्षर *i* और *n* मिलते हैं, जिन्हें 6 और * से दर्शाया गया है।

अब, इस गूढ़ लिपि के आरम्भ को प्रयोग में लाने पर, हम निम्न संयोग को पाते हैं,

53‡‡†

पहले की तरह अनुवाद करने पर हमें प्राप्त होता है

● good

जो हमें समझा देता है कि पहला अक्षर *A* है और पहले दो शब्द 'A good' हैं।

“अब समय आ गया है कि हम सूची कि तरह कुंजी को (जहाँ तक खोजा जा चुका है) क्रम में लगा लें, जिससे गलती न होने पाए। यह इस प्रकार बनेगी:

| | | |
|---|---|---|
| 5 | दर्शाता है | a |
| † | " | d |
| 8 | " | e |
| 3 | " | g |
| 4 | " | h |
| 6 | " | i |
| * | " | n |
| ‡ | " | o |
| ( | " | r |
| ; | " | t |

“अतः, हमारे पास कम-से-कम दर्शाए गए दस बहुत ख़ास अक्षर हैं। हल के ब्यौरों को और आगे बताना अनावश्यक है। *इस प्रकार के साइफर आसानी से हल किये जा सकते हैं,* तुम्हें यह समझाने के लिए और उनको जाहिर करने वाले तर्क की कुछ समझ तुम्हें देने के लिए, मैं काफी बता चुका हूँ। पर यकीन मानो कि हमारे सामने जो नमूने हैं वे सबसे सरल तरह की गूढ़लिपि से सम्बन्ध रखते हैं। अब तुम्हें केवल

पार्चमेंट पर अक्षरों का सुलझा हुआ पूर्ण अनुवाद देना रह गया है। यह यहाँ है:

*'A good glass in the bishop's hostel in the devil's seat forty-one degrees and thirteen minutes northeast and by north main branch seventh limb east side shoot from the left eye of the death's-head a bee line from the tree through the shot fifty feet out.' "*

"लेकिन," मैंने कहा, "अभी भी यह पहेली पहले जैसी बेकार हालत में है। इन सब 'devil's seats,' 'death's heads,' और 'bishop's hotels' जैसे बेमतलब के शब्दों से, अर्थ निकालना कैसे संभव है?"

"मैं मानता हूँ," लेग्रांड ने जवाब दिया, "कि सरसरी तौर से देखने पर मामला अभी भी गंभीर अवस्था में लगता है। अब मेरी पहली कोशिश थी वाक्य का वैसा सरल विभाजन करना, जैसा गूढ़ लिपि के रचयिता का आशय था।"

"तुम्हारा मतलब है, उसपर विराम चिह्न लगाना?"

"वैसा ही कुछ समझो।"

"लेकिन इसको पूरा करना कैसे संभव था?"

“मैंने सोचा कि लेखक[90] की एक खासियत थी कि वह अपने शब्दों को मिलाकर बिना विभाजन के लिखता था, जिससे कि हल करने में कठिनाई बढ़ जाए। अब, वह आदमी जो बहुत तीक्ष्ण बुद्धि का नहीं हो, ऐसे लक्ष्य को पाने के प्रयास में, मामले में लगभग पक्के तौर पर *अति* कर देता। जब वह (अपनी रचना को बनाते समय) अपनी विषयवस्तु में *रुकने के स्थान* पर पहुँचता, जहाँ स्वाभाविक रूप से विराम या बिंदु की आवश्यकता होती, तो यह बिलकुल उचित होता कि वह इस जगह पर अपने अक्षरों को सामान्य से अधिक करीब सटा देता[91]। वर्तमान उदाहरण में, अगर तुम पांडुलिपि पर गौर करोगे, तो तुम आसानी से पांच ऐसी जगहें देखोगे जहाँ (अक्षरों के) असामान्य *सटाव* के ऐसे मामले हैं। इस सुराग पर काम करते हुए, मैंने इस तरह विभाजन कर लिया।

*‘A good glass in the Bishop’s hostel in the Devil’s seat — forty-one degrees and thirteen minutes — northeast and by north — main branch seventh limb east side —*

---

[90] गूढ़ लिपि का रचयिता।

[91] लेग्रांड का मानना है यदि गूढ़ लिपि कर रचयिता अपनी बात में किसी जगह पर विराम लगाना चाहता तो यह स्वाभाविक था कि वह अक्षरों को पार्चमेंट उन जगहों पर सामान्य से कुछ अलग तरीके से लिखे। इस मामले में गूढ़ लिपि का रचयिता, जिन जगहों पर वह विराम लगाना चाहता था, वहाँ उसने अक्षरों को सटा कर लिखा है।

*shoot from the left eye of the death's-head — a bee-line from the tree through the shot fifty feet out.'"*

"इस विभाजन के बावजूद," मैंने कहा, "मैं अँधेरे में हूँ।"[92]

"कुछ दिनों तक," लेग्रांड ने जवाब दिया, "इसने मुझे भी अँधेरे में रख छोड़ा था; जिस दौरान मैंने सावधानी से सलिवन द्वीप के अड़ोस-पड़ोस में 'Bishop's Hotel' के नाम से जानी जाने वाली किसी इमारत के बारे में पूछताछ की; क्योंकि, मुझे स्वाभाविक रूप से अप्रचलित शब्द 'hostel' को छोड़ना सही लगा। इस विषय पर कोई जानकारी न पाने पर, मैं ऐसी परिस्थिति में था कि मुझे अपनी खोज का दायरा बढ़ाना पड़ता और अधिक क्रमबद्ध तरीके से बढ़ना पड़ता। फिर एक सुबह, मेरे दिमाग में बिलकुल अचानक यह बात आई कि यह 'Bishop's Hotel', *Bessop* नाम के एक पुराने परिवार के सम्बन्ध में जिक्र हो सकता है, जिसका न जाने कब से, द्वीप के चार मील उत्तर की ओर, एक प्राचीन रियासत पर बनी हवेली पर कब्ज़ा रहा है। इस प्रकार, मैं रियासत पर गया, और उस जगह के पुराने नीग्रो लोगों से फिर से अपनी पूछताछ पुनः शुरू की। अंततः, सबसे उम्रदराज महिला ने कहा कि उसने *Bessop's Castle* जैसी जगह के बारे में सुना था, और उसे लगता था कि वह मुझे वहाँ तक ले जा सकती थी, पर

[92] कथावाचक कह रहा है कि उसे लेग्रांड कि बात समझ ने नहीं आ रही है।

वह कोई महल अथवा सराय नहीं था, बल्कि एक ऊँची चट्टान थी।

“मैंने उसको उसकी तकलीफ के लिए मेहनताना देने की पेशकश की, और थोड़े संकोच के बाद, वह मेरे साथ उस जगह तक चलने को राज़ी हो गयी। हमने उसे बिना किसी ख़ास मुश्किल के खोज लिया, जिसके बाद मैं उस बूढी महिला को अलविदा कहकर, उस जगह छानबीन करने आगे बढ़ा। Castle सीधी चट्टानों और पत्थरों के अव्यवस्थित संग्रह से बना था–एक पत्थर अपनी ऊँचाई में और साथ-ही-साथ अपनी आवरणयुक्त एवं कृत्रिम बाह्याकृति के लिए, काफी असाधारण था। मैं उसके शिखर पर कठिनाई से चढ़ा और तब काफी दुविधा महसूस करने लगा कि आगे क्या करना चाहिए।”

“जब मैं अपने चिंतन में व्यस्त था, मेरी नजर पत्थर के पूर्वी भाग की संकरी *कगार*[93] पर पड़ी, जो शिखर से (जहां मैं खड़ा था) शायद एक गज नीचे थी। यह कगार लगभग अट्ठारह इंच बाहर निकली थी, और एक फुट से अधिक चौड़ी नहीं थी जबकि इससे ठीक ऊपर चट्टान में गड्ढा, इसे हमारे पूर्वजों द्वारा इस्तेमाल कि जाने वाली *पीठ की तरफ खोखली* कुर्सियों जैसी एक प्राकृतिक समानता देता था[94]। मुझे बिलकुल शंका नहीं

---

[93] Ledge-पहाड़ी से बाहर की ओर निकली हुई चट्टान।

[94] पुराने जमाने में बुजुर्गों द्वारा इसी आकार की कुर्सियों का इस्तेमाल किया जाता था।



थी कि यही पांडुलिपि में इंगित ‘devil's seat’ थी, और अब मुझे इस पहेली का पूरा रहस्य समझ में आता प्रतीत हुआ।

“मैं जानता था कि ‘good glass’ का सम्बन्ध सिवाय दूरबीन के किसी अन्य चीज से नहीं हो सकता था; क्योंकि नाविकों द्वारा 'glass' शब्द का किसी अन्य अर्थ में शायद ही कभी प्रयोग किया जाता है। अब यहाँ, मैंने तुरंत देख लिया कि एक दूरबीन का इस्तेमाल किया जाना था, और उसे इस्तेमाल करने का एक ख़ास दृष्टिकोण था, जिसमें कोई भी *तबदीली स्वीकार्य नहीं थी*। मुझे इस बात पर भरोसा करने में भी कोई संकोच नहीं हुआ कि वाक्यांशों "forty-one degrees and thirteen minutes,' and 'northeast and by north, ' का उद्देश्य दूरबीन को व्यवस्थित करने की दिशा से था। इन खोजों से उत्साहित होकर मैं जल्दी से घर गया, एक दूरबीन को लिया और चट्टान पर लौट आया।

“मैंने खुद को नीचे कगार पर उतारा, और पाया कि सिवाय एक ख़ास स्थिति के उसपर बैठना असंभव था। इस तथ्य ने मेरे पूर्वकल्पित विचार की पुष्टि कर दी। मैं दूरबीन का इस्तेमाल करने बढ़ा। निश्चित रूप से, सिवाय दिखने वाले क्षितिज के ऊपर की ऊँचाई के, 'forty-one degrees and thirteen minutes' का अभिप्राय कुछ नहीं हो सकता था, क्योंकि क्षितिज की दिशा साफ़ तौर से 'northeast and by north' शब्दों से जाहिर होती थी। इस क्षितिज की दिशा की

मैंने तुरंत पॉकेट-कम्पस[95] से पुष्टि कर ली। इसके बाद, दूरबीन को अंदाजे से इकतालीस डिग्री की ऊँचाई के जितना करीब हो सका मैंने साधा। मैंने उसे सावधानी से ऊपर-नीचे किया, जब तक कि मेरा ध्यान एक विशाल पेड़ (जो दूरी से देखने पर भी अपने साथियों[96] से ऊँचा था) की पत्तियों के समूह में एक गोल छेद या खुली जगह ने आकर्षित नहीं कर लिया। इस छेद के केंद्र में मैंने किसी सफेद निशान को महसूस किया। लेकिन पहली बार में, मैं यह पहचान नहीं पाया कि यह क्या था। दूरबीन का *फोकस*[97] ठीक करने पर, मैंने दोबारा देखा, और अब मैंने जान लिया कि यह एक इंसानी खोपड़ी थी।

“इस खोज के बाद मैं इतना आशावादी हो गया कि मैं मानने लगा कि पहेली हल हो गयी है। क्योंकि 'main branch, seventh limb, east side' वाक्यांश का आशय केवल पेड़ पर खोपड़ी की जगह ही हो सकता था। इसी तरह माना जा सकता है कि 'shoot from the left eye of the death's head' का भी इकलौता आशय, केवल दफनाये गए खजाने की खोज के सम्बन्ध में हो सकता था। मुझे लगा कि (सन्देश का) इरादा एक गोली को खोपड़ी से गिराने का था, और यह कि एक पेड़

[95] Pocket-compass-जेब में रखा जा सकने वाला छोटा सा दिशा-सूचक यंत्र।

[96] बाकी पेड़ों के झुण्ड।

[97] Focus-दूरबीन अथवा कैमरे जैसे किसी ऑप्टिकल उपकरण में चीजों को स्पष्ट देखने के लिए लेंस को व्यवस्थित करना।

के तने के निकटतम बिंदु से 'निशाने' (या स्थान जहाँ गोली गिरती) पर एक बी-लाइन[98], या, दूसरे शब्दों में, सीधी रेखा खींचने का था और वहाँ से पचास फीट की दूरी बढ़ने पर एक निश्चित बिंदु दिखता–और इस बिंदु के नीचे मुझे लगा कि एक *मूल्यवान ढेर*[99] का छिपा होना संभव था|।

"यह सब," मैंने कहा, "तो बिलकुल साफ है, और हालाँकि यह चातुर्यपूर्ण है, फिर भी सरल और स्पष्ट हैं। तो जब तुमने Bishop's Hotel छोड़ा, उसके बाद क्या किया?"

"तो, पेड़ के ख़ास लक्षणों को सावधानी से समझने के बाद, मैं घर की ओर मुड़ा। हालांकि जिस क्षण मैंने 'devil's seat' को छोड़ा, (पेड़ की पत्तियों में दिखने वाला) वह गोल छेद गायब हो गया। बाद में, मैं मुड़कर भी उसकी झलक नहीं पा सका। इस पूरे मामले में मुझे जो सबसे ख़ास अक्लमंदी की बात लगी, वह यह तथ्य (लगातार किये गए प्रयोगों ने मुझे यकीन दिला दिया है कि यह *वाकई* एक तथ्य है) था कि सिवाय चट्टान के सिरे पर बनी कगार के, *गोल खाली जगह* को, *पहुंचे जा सकने वाले* किसी भी अन्य दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता था।

'Bishop's Hotel' के अगले अभियान में, जुपिटर मेरे साथ था, जिसने पिछले कुछ हफ्तों में मेरे व्यवहार की उदासीनता को

---

[98] Bee-line-सीधा रास्ता।

[99] खजाना।

बेशक देखा था। तत्पश्चात उसने विशेष सावधानी बरती थी कि मुझे अकेला न छोड़ा जाए। लेकिन, अगले दिन, सुबह जल्दी उठकर मैंने चुपके से निकलने की युक्ति निकाली, और पहाड़ियों पर पेड़ की खोज में चला गया। काफी मशक्कत के बाद मैंने उसे पाया। जब मैं रात को घर आया, तो मेरे नौकर का इरादा मेरी पिटाई करने का था। मैं समझता हूँ कि बाकी सारे कारनामे से तुम मेरी तरह ही भली-भांति परिचित हो।“

“मुझे लगता है,” मैंने कहा, “कि पहली बार खुदाई करते समय, कीड़े को खोपड़ी की बायीं आँख की जगह दाहिनी आँख से गिराने की जुपिटर की बेवकूफी की वजह से, तुमसे चूक हो गयी।”

“बिलकुल ठीक। इस गलती ने ‘निशाने’–अर्थात् पेड़ के निकटतम गड़ी खूँटी की जगह में, लगभग ढाई इंच का अंतर कर दिया था। और अगर खजाना निशाने के *नीचे* होता, गलती महत्वहीन होती। लेकिन ‘*निशाने*’ के साथ पेड़ का *निकटतम स्थान*, सिर्फ एक दिशा में, रेखा के दो बिंदु थे। बेशक हालाँकि गड़बड़ी, शुरुआत में तुच्छ थी, पर जैसे-जैसे हम रेखा में आगे बढ़ते गए, वह बढ़ती गयी और जब हम पचास फीट आगे बढ़े, इसने हमें बिलकुल भटका दिया था। अगर मुझे पक्का विश्वास न होता कि खजाना सचमुच यहीं-कहीं दफ़न था, तो हम लोगों की सारी मेहनत व्यर्थ चली गयी होती।

“लेकिन तुम्हारा आडम्बरपूर्ण ढंग से बोलना, और तुम्हारा कीड़े को झुलाने का आचरण—कितना ज्यादा अजीब था! मुझे पूरा यकीन था कि तुम पागल हो गये हो। और तुम खोपड़ी के भीतर से गोली को गिराने की जगह, इस कीड़े को गिराने पर क्यों जोर दे रहे थे?”

“वैसे, सच कहूं, तो मैं कुछ हद तक अपनी स्वस्थचित्तता से सम्बंधित तुम्हारे प्रत्यक्ष संदेहों से चिढ़ गया था, और मैंने तय किया कि मैं तुम्हें थोड़ी-सी गंभीर पेचीदगी द्वारा, अपने तरीके से चुपचाप सजा दूंगा। इस वजह से मैं कीड़े को झुला रहा था, और इसी वजह से मैंने उसे पेड़ से गिराया। इसके भारी वज़न के बारे में तुम्हारी टिप्पणी ने मुझे यह विचार सुझाया।”

“हाँ, मैं समझ रहा हूँ—और अब केवल एक बात है, जो मुझे परेशान कर रही है। हम उस गड्ढे में मिले उन कंकालों का क्या मतलब निकालें?”

“यही एक प्रश्न है जिसका उत्तर मैं तुमसे बेहतर नहीं दे सकता। हालांकि, उनकी वजह बताने का केवल एक तर्क संगत तरीका है—तब भी (जैसा मेरे विचार से जाहिर होगा) ऐसी नृशंसता पर विश्वास करना घृणास्पद लगता है। यह साफ है कि किड द्वारा (यदि वास्तव में किड ने इस खजाने को छिपाया था, जिसमें मुझे कोई संदेह नहीं है) खजाने को दफनाने का काम करते समय, बेशक उसके साथ सहयोगी रहे होंगे। लेकिन, जब यह काम ख़त्म हुआ, उसने सोचा होगा कि उसके

रहस्य को जानने वाले सभी सहयोगियों का अंत कर देना उचित होगा। जब उसके सहायक गड्ढे में व्यस्त थे शायद फावड़े से एक-दो प्रहार काफी रहे होंगे; (या) शायद हो सकता है दर्जनभर प्रहारों की जरूरत पड़ी हो–इसे कौन बता सकता है?"

*****समाप्त*****


F. Darley
R.S. GILBERT. Sc.